

आसार ए क़यामत

मुसन्निफ़

ताजुशरीआ हज़रत अल्लामा
अख़्तर रज़ा खां कादरी मद्दज़िल्लहू

तर्जुमा

मुहम्मद अमीनुल कादरी बरेलवी

www.jannatikaun.com

आसार—ए—क़यामत

मुसन्निफ़

ताजुशरीफ़ा इज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ कादरी
अजहरी बरेलवी मददजिल्हू



JANNATI KAUN?

—: तरतीब :-

मौलाना मुहम्मद अब्दुरहीम नश्तर फ़ारुकी

—: हिन्दी तर्जमा :-

मौलाना मुहम्मद अमीनुल कादरी बरेलवी

नम्बर शुमार

सफा नम्बर

1. तकदीम	5
आसर-ए-कयामत	
2. जब लोग नमाज़ को जाए करने लगें	15
3. जब अमानत राइगौं कर दी जायें	19
4. जब सूद खोरी की जाने लगे	25
5. जब रिश्त का लेन देन होने लगे	26
6. जब कुर्आन को गाना ठहरा लिया जाये	28
7. जब औलाद दिल की घुठन हो जाये	35
8. जब उलमा अहले सरवत के लिये सीनो पर हाथ बाँधे झुकें	38
9. जब मस्जिदें आरास्ता की जायें	47
10. जब महीने घट जायें	50
11. जब औरतें तुर्की घोड़ों पर बैठें	55
12. जब औरतें मर्दों से और मर्द औरतों से मुशाबहत करें	57
13. जब गैरुल्लाह की कसम खाई जाये	64
14. जब आदमी बगैर तलब के गवाही में सबक़्त करे	77
15. जब ओहदे मीरास हो जायें	78
16. जब औरतें औरतों पर और मर्द मर्दों पर इक्तिफ़ा करें	79

अर्जे मुतर्जिम

जैसे नज़र किताब "आसारे कयामत" जैसा कि नाम से जाहिर है कयामत की निशानियों के मौजूद पर मुन्करिद किताब है जिसे पीर व मुशिद ताजुशरीआ अल्लना अख्बार रज़ा ख़ाँ साहब किब्ला जानशीने मुप्तिर अज़ाम ने तरनीफ़ फरमाया है।

कामि कर्मी रं ख्वाहिश थी कि अल्लामा मीरसूफ़ की किताब को रूबू ज़ांग व काले कारेईन में बहुत नशबूर व मकबूल हो चुकी है हिन्दी में शाए करा दिया जाये ताकि हिन्दी दो हज़ारत इस किताब से फाइदा हासिल कर सकें।

मेरी ख्वाहिश को तकयियत उस वक़्त मिली कि जब मेरे बहुत सारे अइबाब ने मुझ से कहा कि इज़रत की किताब हिन्दी ज़बान में शाए करा दी जाय।

तर्जमा करने में कोशिश यह की गई है कि किताब के अलफ़ाज़ बि ऐनिज़ा हिन्दी में लिख दिशे जायें ताकि हिन्दी दो हज़ारत भी पढ़ने में लज़ज़त व तयरीक़ हासिल कर सकें बअज़ जगह मुश्किल अलफ़ाज़ आसान हिन्दी के ब्रेकिट में लिख दिए गये हैं ताकि हिन्दी पढ़ने वाल आसानी से समझ सके।

आखिर में तमाम ही कारेईन से गुज़ारिश है कि इस किताब को हिन्दी में पेश करने में कहीं कमी, या गलती पायें तो मुतर्जिम की कम इन्ती रामझलत हुए अप्रव व दर गुज़र से काम लें और साथ ही साथ ख़ादिम को मुत्तला करें ताकि अगले रडीशन में उस को दुकरत कर लिया जाये।

अन्ताह तज़ाला की दाश्गाह में दुआ है कि "आसारे कयामत" उसी की तरह हिन्दी में भी मकबूल आम फरमाये और लोगों को इस से फाइदा हासिल कर ने की तौफीक़े रफीक अता फरमाये और मेरे लिए निज़ात का ज़रीआ बनाये।

आमीन वतुकल सारियदिलमुरसलीन

गुलाम ताजुशरीआ

मुहम्मद अभीनुल कादरी बरेलवी

दिसम्बर 2009 मोंबाइल न. 09219132423

तकदीम

क्यामत बर हक और इस्लाम का एक बुनियादी अकीदा है बे शक वह अपने मुअय्यना वक्त पर आयेगी और जरूर आयेगी।

चुनाँचे इरशाद बारी तआला है :-

يَأْتِيَنَّكَ السَّاعَةُ بِغَيْرِ حِسَابٍ "बे शक क्यामत आने वाली है"

जो शख्स क्यामत का इन्कार करे या उस में ज़री बराबर शक करे वह काफिर और खारिज अज़ इस्लाम है (यअनी मुसलमान नहीं रहा)

अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को उन के अच्छे बुरे अअमाल की सज़ा व जज़ा देने के लिये एक ख़ास दिन मुक़रर कर रखा है जिस दिन वह नेको कारों (नेक लोगों) को जन्नत की नेअमतेँ और बदकारों को जहन्नम का अज़ाब देगा उर्फ़ शरअ में उसी दिन का नाम "क्यामत" है

क्यामत की तीन किरमें हैं :

1-क्यामते सुगरा(छोटी क्यामत)

2-क्यामते वुस्ता(दर्मियानी क्यामत)

3-क्यामते कुबरा(बड़ी क्यामत)

क्यामते सुगरा मौत को कहते हैं "مَن مَاتَ فَقَدْ قَامَتْ قِيَامَتُهُ"

यअनी " जो मरगया उस की क्यामत होगई"।

क्यामते वुस्ता यह है कि किसी एक कर्न (जमाने)के सारे लोग मरजायें फिर दूसरे कर्न के नये लोग पैदा हो जायें।

क्यामते कुबरा उस दिन को कहते हैं जिस दिन आसमान व ज़मीन और जो कुछ उस में है सब फ़ना हो जायेंगे। (अलमलफूज हि 3 स 49)

क्यामत कब कितने दिनों के बअद और किस सन में आयेगी? उस का इल्म अल्लाह तआला ने सिवाये हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के तमाम बन्दों से पोशीदा रखा और खुद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को यह हुक्म हुआ कि क्यामत बरपा होने का सन वगैरा अपनी उम्मत से छुपाये रखें।

चुनाँचे "हाशिया सावी अला तफ़सीरिलजलालै" में है :

أنه اطلع على الجنة وما فيها والنار وما فيها وغيره
ذلك مما تواترت به الأخبار ولكن أمر بكتمان البعض.

“यअनी अल्लाह जल्ल शानुहू ने नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को जन्नत व दोज़ख और उन के दाखिली उमूर वगैरा सारे मुआमलात पर इत्तिलाअ वखशी लेकिन बअज़ असरार (राज)को पोशीदा रखने का हुक्म फरमाया, इस सिलसिले में अख्बारे नबवी तवातुर की हद तक मरवी हैं” (जि. सानी स. 104)

लिहाजा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपने किसी भी उम्मत की को यह नहीं बताया कि कयामत कब कितने दिनों के बअद और किस सन में आयेगी ? अलबत्ता कयामत के सन के सिवा कयामत का महीना कयामत की तारीख और कयामत का दिन यह सब कुछ हज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को बता दिया चुनौचे आज दुनिया का बच्चा बच्चा यह जानता है कि कयामत मुहर्रम के महीने में दसवीं तारीख को जुमआ के दिन जोहर व अस्र के दरमियान आयेगी।

ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के विसाल के बअद जब कयामत की वह खुशबू दार हवा गुजर चुकेगी जिस से तमाम मोमिनीन की रूहें बाआसानी परवाज कर जायेंगी सिर्फ़ काफिर ही काफिर बचेंगे फिर उन काफिरों पर चालीस साल का एक ऐसा ज़माना गुज़रेगा जिस में किसी को औलाद न होगी, किसी की उम्र चालीस साल से कम न होगी किसी को भी वुकूअे कयामत की परवाह न होगी। कोई खाना खा रहा होगा, कोई पका रहा होगा, कोई दीवार लेप रहा होगा, कोई हल चला रहा होगा, गर्ज कि सारे लोग अपने मअ्मूल के कामों में मशगूल व मुन्हमिक होंगे कि दफअतन हज़रत इसराफील अलैहिस्सलाम को सूर फूंकने का हुक्म होगा।

शरूअ़ शुरुअ़ में उस की आवाज बहुत बारीक और सुरीली

होगी और रफता रफता बहुत बलन्द और भयानक होती जायेगी लोग कान लगा कर उस की आवाज़ सुनेंगे। बे होश हो कर गिर पड़ेंगे और मर जायेंगे आसमान टुकड़े, टुकड़े हो कर बिखर जायेगा ज़मीन में इतना ज़बरदस्त ज़लजला और खौफनाक भूचाल आयेगा कि ज़मीन काँपने लगेगी पहाड़ रेज़ा, रेज़ा हो कर गर्द व गुबार की तरह उड़ने लगेगा। चाँद व सूरज और सितारे बे नूर हो कर झड़जायेंगे यहाँ तक कि सूर और हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम भी फना हो जायेंगे।

उस वक़्त दुनिया में उस वाहिदे हकीकी के सिवा कोई न होगा वह फरमायेगा:

لَيْسَ الْمَلِكُ الْيَوْمَ. यअनी आज किस की बादशाही है ?

कहाँ हैं जोर व सितम (ज़ुल्म) करने वाले ? मगर वहाँ कोई होगा ही नहीं जो कुछ जवाब दे फिर अल्लाह वाहिदुलकहहार वलजब्बार खुद ही इरशाद फरमायेगा:

لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ. यअनी आज सिर्फ अल्लाह वाहिद कहहार की सलतनत है (पारा 24 / सूरए मोमिन आयत 15)

फिर जब अल्लाह चाहेगा हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम को ज़िन्दा फरमायेगा और सूर को पैदा कर के दो बारा फूँकने का हुक्म देगा सूर फूँकते ही तमाम अब्बलीन व आखिरीन जिन्न व मलाइका, इनसान व हैवान गर्ज कि तमाम जानदार मख़लूकात ज़िन्दा हो जायेंगे।

उस दिन सब से पहले मुसतफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इस कर् व फर (शान) के साथ अपनी कब्रे अनवर से बर आमद होंगे कि आप के दायें हाथ में हज़रत सिद्दीक़े अकबर रदियल्लाहु तआला अन्हु का हाथ होगा और बायें हाथ में हज़रत फारुके अज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु का हाथ होगा फिर उस के बअद हुज़ूर मक्का मुअज़्जमा और मदीना मुनव्वरा के मक़ाबिर में जितने

भी मुसलमान होंगे सब को ले कर मैदाने महशर में तशरीफ़ ले जायेंगे जो सर ज़मीने मुल्के शाम पर मुन्अकिद (काइम) होगा।

क़यामत के आने से पहले बहुत से अलामत व आसारे क़यामत का जुहूर होगा जिन का तफ़सीली इल्म रब्बुलइज़्ज़त ने अपने प्यारे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अता फ़रमाया और आप ने वह अलामतें अपनी उम्मत पर आश्कार(जाहिर) फ़रमादीं।

चुनाँचे हज़रत हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

”**قَامَ فِينَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَقَامًا تَرَكَ شَيْئًا يَكُونُ فِي مَقَامِهِ ذَلِكَ إِلَى قِيَامِ السَّاعَةِ إِلَّا حَدَثَ بِهِ حِفْظُهُ مِنْ حِفْظِهِ وَنَسِيَهُ مِنْ نَسِيهِ قَدْ عَلِمَهُ أَصْحَابِي هَؤُلَاءِ وَإِنَّهُ لَيَكُونُ مِنْهُ الشَّيْءُ قَدْ نَسِيْتَهُ فَأَرَاهُ فَاذْكُرْهُ كَمَا يَذْكُرُ الرَّجُلُ وَجْهَ الرَّجُلِ إِذَا غَابَ عَنْهُ ثُمَّ إِذَا رَأَاهُ عَرَفَهُ.**“

यअ़नी “एक मरतबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने खड़े हो कर क़यामत तक पेश आने वाली हर चीज़ बतादी जिसे मेरे यह साथी जानते हैं फिर जिस ने उन्हें याद रखा सो याद रखा और जो भूल गया सो भूल गया जब कोई बात वाक़ेअ़ होती तो मेरे उन साथियों में से कोई बता देता जिस को मैं भूल गया होता तो मुझे ऐसे याद आजाती जैसे किसी गाइब आदमी का चेहरा बयान किया जाता और मैं देख कर उसे पहचान लेता (मिशकात शरीफ़ स 461)

बिला शुबह यह पेशीन गोइयाँ(भविष्य वाणी) इज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बे इन्तिहा समन्दरे इल्म का एक कतरा और **”وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ“** का एक छोटा सा नमूना हैं।

इन पेशीन गोइयाँ और अलामतों की दो किस्में हैं एक “अलामाते सुगरा” यअ़नी छोटी निशानियाँ और दूसरी “अलामाते कुबरा” यअ़नी बड़ी निशानियाँ।

अलामाते सुगरा वह निशानियाँ हैं जिन का जुहूर कयामत आने से बहुत पहले ही होने लगेंगा और अलामाते कुबरा वह निशानियाँ हैं जो कयामत के बिल्कुल करीब जाहिर होंगी।

जेरे नज़र "अलामाते सुगरा" से मुतअल्लिक "कन्जुल उम्माल" की एक ऐसी हदीस पर मुश्तमिल है जो तकरीबन कयामत की 72 निशानियों को मुहीत है।

मुरशिदी व उस्ताज़ी हुज़ूर ताजुशरीआ हज़रत अल्लामा अलहाज अशशाह मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ कादरी अज़हरी बरेलवी मदज़िल्लाहुन्नूरानी ने सब से पहले उस हदीसे पाक का सलीस तर्जमा फ़रमाया है उस के बाद सिर्फ़ उन आसार व अलामात (निशानियों) पर कलाम फ़रमाया है जो आम फ़हम न थे और जो अलामात आम फ़हम और वाज़ेह थी उन का तर्जमा ही उस अन्दाज़ में फ़रमाया है कि मज़ीद किसी तशरीह व तौज़ीह की ज़रूरत ही बाकी नहीं रही है।

JANNATI KAUN?

हुज़ूर ताजुशरीआ ने जिन अलामात व आसार की तशरीह व तौज़ीह की है उन्हें ख़ास तौर पर उन की ताईद अहादीसे करीमा ही से वाज़ेह फ़रमाया है इस तरह यह किताब "आसारे कयामत" पर मुश्तमिल हदीसों का एक मबसूत और नादिर व दिल आवेज़ गुलदस्ता बन गई है नीज़ उस किताब में आप ने "आसारे कयामत" से मुतअल्लिक बेश्तर उन गोशों को आशकार (जाहिर) फ़रमाया है जो अब तक आम लोगों की नज़रों से ओझल थे।

इस किताब की सब से बड़ी खूबी यह है कि उस में जो भी बात कही गई है उसे हवालों से मुदल्लल बयान किया गया है। मज़ीद राकिम ने उन हवालों की तख़रीज के साथ साथ उन की अस्ल इबारतें भी नक़ल करदी हैं जिस से पढ़ने वालों के लिए यह आसानी पैदा होगई है कि वह जब चाहें उन के माख़ज़ व मराज़ेअ की तरफ़

रुजूअ कर सकते हैं।

राकिम ने किताब में बअज मकामात पर हाशिये का भी इजाफा कर दिया है मकसद यह है कि कारी के लिये" आसारे क्यामत" से मुतअल्लिक ज्यादा से ज्यादा मअलूमात फराहम कर दी जायें ताकि उन से इबरात हासिल करते हुए अपने शब व रोज गुजारे जायें।

अल्लाह तबारक व तआला जुमला मुआवेनीन को जज़ा-ए-ताम अता फरमाये और इस किताब को मकबूले खास व आम जरीआ-ए-रुश्द-व हिदायत अनाम और आखिरत में मुझ नाचीज़ के लिये सबबे गाफिर असाम(गुनाहों से बख्शिश का सबब) बनाये! आमीन बिजाहि सय्यदिलमुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम व अला आलिही व असहाबिही अजमईन।

मुहम्मद अब्दुरहीम नशतर फारुकी खादिम मरकजी दारुलइफता 82/
सौदा गरान रजा नगर बरेली शरीफ यूपी।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
تَحْمُودُهُ وَنُصَلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيمِ

عن زيد بن واقد عن مكحول عن علي قال قال رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم : من اقترب الساعة اذا رأيتم الناس أضاعوا الصلاة ، و أضاعوا الأمانة ، و استحلوا الكبائر ، و أكلوا الربا ، و أخذوا الرشى ، و شيدوا و البناء ، و أتبعوا الهوى ، و باعوا الدين بالدنيا ، و اتخذوا القرآن مزامير ، و اتخذوا جلود السباع صغافاً ، و المساجد طرقات و الحرير لباساً ، و كثر الجور ، و فشا الزنا ، و تهاونوا بالطلاق ، و اتّمن الخائن ، و خون الأمين ، و صار المطر قيظاً ، و الولد غيظاً ، و أمراء فجرة ، و وزراء كذبة ، و أمناء خونة ، و عرفاء ظلمة ، و قلت العلماء ، و كثر القراء ، و قلت الفقهاء ، و حليت المصاحف و زخرفت المساجد ، و طولت المنابر ، و فسدت القلوب ، و اتخذوا القينات ، و استحلوا السعائب ، و شربت الخمر ، و عطلت الحدود ، و نقصت الشهور ، و نقصت المواثيق ، و شاركت المرأة زوجها فى التجارة ، و ركب النساء البراذين ، و تشبهت النساء بالرجال و الرجال بالنساء ، و يحلف بغير الله ، و يشهد الرجل من غير أن يستشهد ، و كانت الزكوة مغرماً ، و الامانة مغنماً ، و أطاع الرجل امرأته و عقوق أمه و أقصى أباه و صارت الامارات مواريث ، و سب آخر هذه الأمة اولها ، و أكرم الرجل اتقاء شره ، و كثر الشرط ، و صعدت الجهال المنابر و لبس الرجال التيجان ، و ضيقت الطرقات ، و شيد البناء و استغنى الرجال بالرجال و النساء بالنساء ، و كثر خطباء منابرهم ، و ركن علمائكم الى ولائكم فاحلوا لهم الحرام و حرموا عليهم الحلال و أفتوهم بما يشتهون ، و تعلم علماءكم العلم ليحلبوا به دنانيركم و دراهمكم و اتخذتم القرآن

تجارة، وضيعتم حق الله في أموالكم، و صارت أموالكم عند شراركم، و
 قطعتم أرحامكم، و شربتم الخمر في ناديككم و لعبتم بالميسر، و ضربتم
 بالكبر و المعرفة و المزامير، و منعتهم محاويجكم زكاتكم و رأيتموها
 مغرماء، و قتل البرئ ليغيظ العامة بقتله و اختلفت أهواؤكم، و صار العطاء
 في العبيد و السقاط، و طفف المكائيل و الموازين و وليت أموركم
 السفهاء (أبو الشيخ في الفتن و عويس في
 جزئه و الديلمي) (كنز العمال، جلد ۱۲، ص ۵۷۳/۵۷۴)

“हजरत जैद इब्ने वाकिद से रिवायत है, उन्होंने ने मवहूल से
 रिवायत की, उन्होंने मौला अली कर्मल्लाहु वजहुलकरीम से रिवायत
 की। फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कि
 कुर्वे कयामत(कयामत के करीब) की निशानियों में से है, जब तुम देखो
 लोगों ने नमाज़ को जाए कर दिया, और अमानत को राइगों(बर्बाद) कर
 दिया, और कबीरा गुनाहों को हलाल ठहराया, और सूदखोरी और
 रिश्वत सतानी(रिश्वत का लेन देन) की, और मकान पुख्ता बनाये, और
 ख्वाहिशों की पैरवी की, और दीन को दुनिया के बदले बेचा, और
 कुआन को ⁽¹⁾ गाना ठहरा लिया, और जब तुम देखो लोगों ने ⁽²⁾ दरिन्दों
 की खालों को बत्तौर जीन इस्तिअमाल किया, औरे

1. यअनी गाने के तौर पर उतार चढाओ के साथ कुआन पढेंगे या साज़ के साथ
 कुआन की तिलावत करेंगे और गालिबन यह पिछली बात भी दाकेअ हो गई
 और पहली तो कुरी-ए-जमाना में आग है. (अजहरी गुफिरलह)

2. इस से शेर वगैरा की खाल पर बेठने से मुमानअत(इन्कार)नअलूम होती है और यह
 मुमानअत वअज हदीसों में वारिद हुई और अगर उस से नकसूद फखर व
 मुबाहात हो तो उस से मुमानअत उस की तहरीम(हराम होने का) का फायदा देगी
 (अजहरी गुफिरलह)

मरिजदों को रास्ता बनालिया और मर्दों ने रेशम को पहनावा ठहरा लिया, और जब जुल्म ज्यादा हो, और जिना आम हो और तलाक़ मअमूली बात समझी जाये और खाइन के पास अमानत रखी जाये और अमीन को खाइन ठहराया जाये, और बारिश बाइसे-ए-⁽¹⁾ शिद्दते गर्मी हो जाये, और जब औलाद दिल की घुटन हो जाये, और बदकार उमरा और झूटे वजीर, और खाइन अमीर, और जालिम मुहतसिब हों, और उलमा अहले सरवत के लिए सीनों पर हाथ रख कर झुकें और कुरा ब-कसरत हों और फुक्हा की किल्लत हों, और मुसाहफ़ सोने चाँदी से मुजैयन किये जायें, और मरिजदें आरास्ता की जायें और मिम्बर दराज़ किये जायें और दिल फासिद हो जायें, और लोग गाने वालियाँ रखें, और बाजे हलाल ठहराये जायें, और शराबें पी जायें और अल्लाह के हुद्द मुअज़ल किये जायें, और महीने घट जायें और अहद व पैमान तोड़े जायें, और औरत अपने शौहर की तिजारत में शरीक हो, और औरतें तुर्की घोड़ों पर बैठें, और औरतें मर्दों से और मर्द औरतों से मुशाबहत करें, और गैरुल्लाह की कसम खाई जाये, और आदमी गवाही में सब्कत करें बगैर उसके कि गवाही तलब की जाये, और ज़कात तावान ठहरे, और अमानत माले गनीमत, और मर्द अपनी बीवी की इताअत करे, और माँ की नाफरमानी करे, और बाप को दूर रखें, और ओहदे मीरास हो जायें, और इस उम्मत के पिछले लोग अगलों को ⁽²⁾ गालियाँ दें और आदमी की इज्जत उस के शर के डर से हो और सिपाहियों की कसरत हो, और जाहिल मिम्बर पर चढ़ें, और मर्द ताज पहनें, और रास्ते तंग हों, और रिहाइश के मकान ऊँचे पुख्ता

1. गलियन मतलब यह है कि बारिश कम हो और खुश्क साली आम हो, या बारिश का असर अपनी सबजा और खुश्की हवा मुत्ताब न हो (अजहरी गुफिरलहु)

2. इस के मरिजदों की जमानिना राफज़ी, खारिजी, बहावी, देवबन्दी, नेंदरी, कादयानी, वगैराहुन और उन जैसे लोग फिरकहा-ए-बातिला है (अजहरी गुफिरलहु)

बनें, और मर्द मर्दों पर, और औरतें औरतों पर इक्तिफा करें, और तुम्हारे भिम्बर के खतीब ब-कसरत हों, और तुम्हारे उलमा तुम्हारे बालियों की तरफ झुकें, तो उन के लिये हराम हलाल ठहरा दें, और हलाल को हराम कर दें, और उन को मन चाहा फतवा दें और तुम्हारे उलमा इल्म इस लिए सीखें कि तुम्हारे रईसों के दीनार व दिरहम इकट्ठा करें, और तुम कुर्आन को तिजारत ठहरा लो, और तुम्हारे मालों में जो अल्लाह का हक है उसे जाए कर दो, और तुम्हारे माल तुम्हारे अशरार के कब्जों में हों, और तुम अपने रिश्तों को काटो, और अपनी मजलिसों में शराबें पियो, और जुआ खेलो, और तब्ला बजाओ और मजामीर के आलात बजाओ, और अपने मोहताजों को अपनी जकात न दो, और जकात को तावान समझो और बे गुनाह का कत्ल होता कि आम लोग उस के कत्ल से घटें, और तुम्हारे ख्यालात मुख्तलिफ हों, और बख्शिशें गुलामों में और कम मरतबा लोगों में आम हों, और पैमाने और तराजूँ कम ⁽¹⁾ हों और तुम्हारे उमूर के वाली बैवकूफ लोग हों।

1. यअनी कम तोलने का रिवाज आम हो जाये (अजहरी गुफिरलह)

जब लोग नमाज़ को जाए करने लगे

नमाज़ को जाए करना चन्द तौर से है। नजासत से परहेज़ न करे कपड़े में इस कदर नजासत हो जिस से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है या नापाक जगह में नमाज़ पढ़ने या वुजू सहीह तौर पर न हो या नमाज़ में कोई शर्त या रूकन अदा न हो या मआज़ल्लाह दिल तहारते वातिनी व नूरे ईमानी से खाली हो इस तरह कि अल्लाह व रसूल जल्ल व अला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तअज़ीम से खाली हो और जरूरियाते दीन में से किसी अग्रे जरूरी दीनी मसलन अल्लाह की पाकी, नबी के इल्मे गैब या ख़ातिमुलअम्बिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़त्मे नुबुव्वत व गैरा का मुन्किर हो अगर्चे जबान से कलिमा पढ़ता हो और यह आखिरी सूरत बदतरीन हालत है।

जिस में नमाज़ ही को राइग़ा करना नहीं बल्कि ईमान को भी जाए करना है। आज कल इस के भिस्दाक वहाबिया, दयाबना, कादयानी राफ़जी और तमाम मुन्किरीने जरूरियाते दीन हैं। उन्हीं के लिये मुख़िरे सादिक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने गैब की सच्ची ख़बर दी।
 یٰۤاَنۢیُّۤا قَوْمِ لَاۤیۤطۤعُکُمُ اللّٰهُ حَتّٰی تَعْلَمُوۤا اَنۢیُّۤا قَوْمِ لَاۤیۤطۤعُکُمُ اللّٰهُ حَتّٰی تَعْلَمُوۤا
 "एक ऐसी कौम नमाज़ पढ़ेगी जिस का दीन न होगा"।

उन तमाम सूरतों में नमाज़ अस्तलन होती ही नहीं अगर्चे जाहिरी सूरत नमाज़ की देखने में आती है और नमाज़ को राइग़ा करने की यह सूरत भी है कि अस्तलन नमाज़ न पढ़े और नमाज़ को जाए करना यह भी कि रूकूअ व सुजूद में तमानियत जो कि वाजिब है न करे।

इसी तरह वाजिबाते नमाज़ में से कोई वाजिब छोड़ देना, या ख़शूअ व ख़ुजूअ के बगैर नमाज़ पढ़ना, इन तमाम सूरतों में तज़ीअे सलात लाजिम आती (नमाज़ को जाए करने का हुक्म) है।

"बुखारी शरीफ" में हजरत हुजैफ़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु से

हदीस मरवी है कि उन्होंने ने देखा एक शख्स को कि रुकूअ व सुजूद कागिल तौर पर नहीं कर रहा था जब उस ने अपनी नमाज़ पूरी की तो हज़रत हुजैफा ने कहा तूने नमाज़ नहीं पढ़ी रावी का बयान है मैं गुमान करता हूँ कि हज़रत हुजैफा रदियल्लाहु तआला अन्हु ने उस शख्स से कहा कि अगर तू इस हालत पर मरा तो सुन्नते मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर न मरेगा।

हदीसे पाक के अल्फाज़ यह हैं।

عن حذيفة انه رأى رجلا لا يتم ركوعه ولا سجوده فلما قضى صلاته قال له حذيفة ما صليت قال واحسبه قال لومت مت على غير سنة محمد صلى الله عليه وسلم، (بخاری شریف، جلد اول ص ۵۶)

नमाज़ को ज़ाए करना यह भी है कि वक़्त गुज़ार कर पड़े, उसी "बुखारी शरीफ़" में हज़रत ज़हरी रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया। वह कहते हैं कि मैं दमिश्क में अनस इब्ने मालिक रदियल्लाहु तआला अन्हु की खिदमत में हाज़िर हुआ। वह रोते थे तो मैं ने अर्ज़ की कि आप के रोने का सबब क्या है? उन्होंने कहा मैं नबी अलैहिस्सलाम के ज़माने की कोई चीज़ नहीं पहचान सिवाये इस नमाज़ के और यह नमाज़ भी ज़ाए करदी गई।

हदीस पाक के अल्फाज़ यह हैं।

عن عثمان ابن رواد اخي عبد العزيز قال سمعت الزهري يقول دخلت على انس بن مالك بدمشق وهو يبكي فقلت ما يبكيك فقال لا اعرف شيئا مما ادركت الا هذه الصلوة وهذا الصلوة قد ضيعت (بخاری شریف، جلد اول ص ۱۷۶)

यह हदीस नमाज़ को उस का वक़्त गुज़ार कर अदा करने के बयान में इमाम बुखारी ने जिक्र की। नीज़ तबरांनी में उन्हीं अनस इब्ने

मालिक रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की फरमाते हैं फरमाया हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जो नमाजें उनके वक्तों पर पढ़े और उन का वुजू कामिल हो और नमाजों में क़याम खुशूअ व रूकूअ व सुजूद कामिल तौर पर करे तो उस की नमाज सफ़ेद चमकती हुई निकलती है कहती है अल्लाह तेरी हिफ़ाजत करे जिस तरह तूने मेरी हिफ़ाजत की और जो ना वक्त पर नमाज पढ़े और वुजू कामिल न करे और न खुशूअ व रूकूअ व सुजूद तमाम करे तो उस की नमाज़ निकलती है सियाह अँधेरी, कहती है अल्लाह तुझे जाए करे जैसा कि तूने मुझे जाए किया यहाँ तक कि पुराना कपड़ा लपेट दिया जाता है फिर उस नमाज़ी के मुँह पर मारी जाती है।

इसी के हम मअ़्ना इज़रत इबादा इब्ने सामित से मरवी है और कअ्व इब्न अजरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है। फरमाया हमारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जलवा गर हुए और हम सात नफ़र थे। चार हमारे आज़ाद करदा गुलामों में से और तीन हमारे अरबों में से। हम लोग हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मरिजद पर अपनी कमर टिकाये थे फरमाया तुम लोग किस लिये बैठे हो? हम ने अर्ज किया हम बैठे हैं नमाज़ के इन्तिज़ार में तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम थोड़ी देर ठहरे फिर हम पर तवज्जह फरमाई तौ फरमाया क्या तुम जानते हो कि तुम्हारा रब क्या फरमाता है? हम ने अर्ज किया नहीं फरमाया तो जान लो कि तुम्हारा रब फरमाता है जो पाँचों नमाज़ें उन के वक्तों पर पढ़े और इन नमाज़ों की पाबन्दी करे और उन के आदाब की हिफ़ाजत करे और नमाज़ों को जाए न करे और नमाज़ों को नाहक तसाहुल से जाए न करे तो इस के लिए मेरे ऊपर अहद है कि मैं उस को जन्नत में दाखिल करूँ और जो उन नमाज़ों को उन के वक्तों पर न पढ़े और उन के आदाब की हिफ़ाजत न करे और नाहक तसाहुल(सुस्ती) से

उन्हें जाए कर दे तां उस के लिये मेरे ऊपर कोई
अहद नहीं। चाहूँ तो अज़ाब दूँ और चाहूँ तो बख्श दूँ।

हदीस पाक के अल्फ़ाज़ यह हैं।

وَعَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى
اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ صَلَّى الصَّلَوَاتِ لَوَقْتَهَا وَ
اسْبَغَ لَهَا وَضُوءَهَا وَاتَمَّ لَهَا قِيَامَهَا وَخَشَعَهَا وَرَكَعَهَا
وَسَجَدَهَا خَرَجَتْ وَهِيَ بِيَضَاءٍ مَسْفُورَةٌ تَقُولُ حَفِظَكَ اللَّهُ
كَمَا حَفِظْتَنِي وَمَنْ صَلَّى لَغَيْرِ وَقْتِهَا وَلَمْ يَسْبِغْ لَهَا وَ
ضُوءَهَا وَلَمْ يَتِمَّ لَهَا خَشَعَهَا وَلَا رَكَعَهَا وَلَا سَجَدَهَا
خَرَجَتْ وَهِيَ سُودَاءُ مَظْلَمَةٌ تَقُولُ ضَيَعَكَ اللَّهُ كَمَا
ضَيَعْتَنِي حَتَّىٰ إِذَا كَانَتْ حَيْثُ شَاءَ اللَّهُ لَفَتْ كَمَا يَلِفُ
الثَّوْبُ الْخُلُقَ ثُمَّ ضَرَبَ بِهَا وَجْهَهُ رَوَاهُ الطَّبْرَانِيُّ فِي
الْأَوْسَطِ وَفِيهِ عِبَادٌ كَثِيرٌ وَقَدْ أَجْمَعُوا عَلَىٰ ضَعْفِهِ. قُلْتُ
وَيَأْتِي حَدِيثُ عِبَادَةٍ بِنَحْوِ هَذَا فِي بَابٍ مِنْ لَا يَتِمُّ صَلَاتُهُ وَ
يَسْبِغُ رَكَعَهَا وَعَنْ كَعْبِ بْنِ عَجْرَةَ قَالَ خَرَجَ عَلَيْنَا
رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ سَبْعَةٌ نَقِرُ
أَرْبَعَةً مِنْ مَوَالِينَا وَثَلَاثَةً مِنْ عَرَبِنَا مُسْنَدِي ظُهُورِنَا إِلَى
مَسْجِدِهِ فَقَالَ مَا أَجْلَسَكُمْ قُلْنَا جَلَسْنَا نَنْتَظِرُ الصَّلَاةَ قَالَ
فَأَرَمَ قَلِيلًا ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْنَا فَقَالَ هَلْ تَدْرُونَ مَا يَقُولُ رَبُّكُمْ
قُلْنَا لَا قَالَ فَإِنْ رَبُّكُمْ يَقُولُ مِنْ صَلَّى الصَّلَوَاتِ الْخَمْسَ
لَوَقْتَهَا وَحَافِظَ عَلَيْهَا وَلَمْ يَضِيعْهَا اسْتَخْفَافًا لِحَقِّهَا فَلَهُ
عَلَىٰ عَهْدَانِ ادْخُلَ الْجَنَّةَ وَمَنْ لَمْ يَصِلْهَا لَوَقْتَهَا وَلَمْ
يَحَافِظْ عَلَيْهَا وَضِيعَهَا اسْتَخْفَافًا بِحَقِّهَا فَلَا عَهْدَ لَهُ عَلَىٰ
أَنْ شِئْتُ عَذِّبْتُهُ وَأَنْ شِئْتُ غَفَرْتُ
لَهُ“ (مَجْمَعُ الزَّوَادِ، جلد اول، ص ۳۰۲)

इस हदीस को रिवायत किया तबरांनी ने "औसत" में और

'कबीर' में इमाम अहमद की अल्माज दूँ हैं। रावी ने कहा उस दौरान कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मस्जिद में ऐसा था। हम लोग हज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मस्जिद की तरफ़ अपनी कमर टिकाये थे। इतने में हज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हज़रा-ए-मुकद्दसा से बाहर तशरीफ़ लाये नमाज़े ज़ावर के वक़्त में तो फ़रमाया तुम लोग इला आखिरिही। इस के बाद इमाम अहमद ने मजकूर वाला हदीस के हम ग़अना रियायत की।

जब अमानत राइग़ों कर दी जाये

यअनी अमानत को उस के मुस्तहक तक न पहुँचाया और हदीस में लपके अमानत आम हैं जो माल इल्म, अमल सब को शामिल हैं।

तफ़सीरे ख़ाज़िन में ज़ेरे आयत करीमा :

”إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا.” यअनी

‘बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिन की हैं उन्हें सुपुर्द करो’ (आद 8/17) (तुम्हारे निहा अर्थ के अनुसार)

यह आयत तमाम अमानत को शामिल है तो उस के हुक्म में हर वह अमानत दाख़िल है जिस की जिम्मा दारी इन्सान को सौंपी गई है और यह तीन क़िस्म पर है:

पहली यह कि अल्लाह की अमानत को मलहूज रखे और यह अल्लाह के अहक़ाम मजालाना और ममनूआत से परहेज करना है। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद का कौल है कि अमानत हर शय में लाज़िम है यहाँ तक कि जुजू और जनाबत से पाकी के लिये ग़ुस्ल नमाज़, ज़कात रोज़ा और हर क़िस्म की इवदत में।

दूसरी क़िस्म यह है कि दन्दा अपने नापस में अल्लाह की अमानत मलहूज रखे और वह अल्लाह की वह नेअमते हैं जो अल्लाह ने दन्द के तमाम अअज़ा में रखी हैं तो ज़बान की अमानत यह है कि

जबान को झूठ गीदत चुनली वगैरा खिलाफ शतअ बातों से महफूज रखे और तबय की अमानत यह है कि मुहरमात पर निगाह से तबय को बचाये और तबय की अमानत यह है कि लख से हयाई और झूठी बातें और उस के भिरस खिलाफ शतअ बातें सुनने से पराये तबय।

तीसरी किस्म यह कि बन्दा अस्लाह के बन्तों के साथ मुआमला में अमानत का लिहाज है। लिहाजा उस पर बदीअत और आशियत का उन लोगों को लौटाना जरूरी है जिन्होंने ने उस के पास यह अमानत रखी और उस में उन के साथ खियानत करना मनअ है।

हजारव अबूहरीरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से हदीस गरवी है कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया अमानत उस को पहुँचा जिस ने तेरे पास अमानत रखी और उस के साथ खियानत न कर जिस ने तेरे साथ खियानत की"।

“رواه ابو داؤد و ترمذی فقال حدیث حسن غریب”

यज्जी इमाम तिरमिजी ने हदीस हसन गरीब है।

इसी ने नाथ और तौल को पूरा करना दाखिल है। लिहाजा उन में कमी करना हराम है और उस के उन्मू में अमीरों और बादशाहों की रईयत(प्रजा)के साथ और उलमा का आम मुसलमानों के साथ खैरख्याही दाखिल है तो यह तमाम चीजे इस अमानत की कबील से हैं जिस का उन ने मुस्तहकीन को पहुँचाने का हुक्म अल्लाह तआला ने दिया।

अल्लामा बगदी ने अपनी रानद से रिवायत की। फरमाते हैं कम ऐसा हुआ कि हम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने खुत्या दिया और यह न फरमाया हो कि उस का ईमान नहीं। जिस के पास दियानत दारी नहीं। और उस का दीन नहीं जिस को अहद का पास नहीं।

अल्लामा मौसूफ के अल्फाज यह हैं

”عن انس قال فلما خطبنا رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم الا قال لا ايمان لمن لا امانة له ولا دين لمن لا عهد له“ (تفسير خازن، جلد اول، ص ۳۷۱)

अकूलु(मैं कहता हूँ) उलमा की आम मुसलमानों के साथ खैर ख्वाही यही है कि वह अल्लाह व रसूल(जल्ल व अला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)के अहकाम उन तक पहुँचायें और अहल को वह इल्म सिखायें जो उन के पास उस की अमानत है उस को छुपालेना अमानत को जाए करना है¹:

1.अमानत की बर्बादी इस तरह भी होगी कि हर काम नाअहलों के सुपुर्द हो जायें। चुनाँचे हजरत अबूहुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है वह फरमाते हैं :

بينما النبي صلى الله تعالى عليه وسلم يحدث ان جاء اعرابي فقال متى الساعة قال اذا ضيعت الامانة فانظر الساعة قال كيف اضاعته قال اذا وسد الامر الى غير اهله فانظر الساعة

यअनी उस दौरान कि नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम गुफतुगू फरमा रहे थे एक एअराबी आया और अर्ज किया कि कयामत कब आयेगी? हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया: जब अमानत बर्बाद की जाने लगे तो तुम कयामत का इन्तिजार करो। उस ने सवाल किया अमानत की बर्बादी किस तरह होगी? इरशाद हुआ जब हर काम नाअहलों को सौंपा जाने लगे तो तुम कयामत का इन्तिजार करो (मिशकात शरीफ स. 469) नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की यह पेशीनगोई भी इस ज़माने में जाहिर होने लगी है चुनाँचे हम आज देख रहे हैं कि हुकूमत व सलतनत ऐसे लोगों के हाथ में है जो किसी तरह भी उस के अहल नहीं। उसी तरह गाँव की सरदारी व प्रधानी नालाइकों के सुपुर्द है हद तो यह कि मसाजिद की तोलियत और उन का निजाग व इन्सिराम भी ऐसे ऐसे बे नमाजी और दुनियादार मालदारों व सेठों के हाथ है जो उमूमन ईद व बकरईद की नमाज पढ़ लेते हैं या कभी कभी जुमआकी नमाज के लिये मस्जिदों में आजाते हैं यूँही दीनी दर्सगाहों और दीमर कौमी इदारा के अअला ओहदेदारान (याकी अमल्लेराफ वर)

इमाम जलालुद्दीन सियूती ने अपनी किताब "अललालीयुलमसनूआ" में अपनी सनद से सरकार से रिवायत किया।

”عن عباس قال قال رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم تناصحوا في العلم ولا يكتم بعضكم بعضا فان خيانة في العلم اشد من خيانة في المال .

वअनी "हजरत अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया : फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कि इल्म के मुआमले में खैर ख्वाही से काम लो और कोई किसी से इल्म न छुपाये इस लिये कि इल्म में खियानत माल में खियानत से सख्त तर है" (जिल्दे अब्बल, स 208)

तकरीरे बाला (ऊपर लिखे मजमून)से रौशन हो गया और अदाए फर्जियत व अमानत का मअना खूब रौशन हो गया और यह भी मअलूम हो गया कि अमानत ज़े जाए करना उन तमाम मजकूरा सूरतों (जिक की हुई सूरतों)को शामिल है यह दहने मुबारक (मुँह मुबारक)से निकले हुए एक कलिमे की जामेइय्यत और उस में कसरते मआनी (ज्यादा मआनी)का यह हक है कि किसी का बयान इस का इहाता नहीं कर सकता

मैं निसार तेरे कलाम पर मिली यूँ तो किसी को जबाँ नहीं।
यह सुखन है जिस में सुखन न हो वह बयाँ है जिस का बयाँ नहीं

"इल्म को छुपाना" इस इस से गुराद यह है कि अहल से पोशीदा न रखे जैसा कि तकरीरे बाला में गुजरा और खुद आयते मसालन नाहिमे अअला और सिकेंटरी का ओहदा ऐसे लोगों के सुपुर्द किया जा रहा है जो इल्मे दीन और कौम के मसाइल व जरूरियात से कतई नादलद हैं।

जाहेर ती बात है अगर अच्छी से अच्छी चीज भी ना अहलों के हाथ में पहुँच जाये तो वह बंद से बंदतर हो ही जायेगी। गर्ज कि इस जमाने का हर काम नाअहलों और नालाइकों के सुपुर्द है लेकिन फिर भी खुदा का फजल है कि कुछ लोग अभी उन ओहदों के लाइक और अहल मौजूद हैं (फारुकी गुफिरलह)

करीमा से यह कैद सराहतन जाहिर है और बिलाशुबह यह माल में खियानत से ज्यादा सख्त है कि बअज सूरतों में इल्म के छुपाने से नोबत कुफ तक पहुँचती है जैसे हुजूर के बड़े मशहूर बहुत फजाइल कसीरा को छुपाना और उन के बजाये ऐसी बातें बयान करना जिस से तन्कीसे शान रिसालत होती है (नबी की शान में कमी होती है) यह अगले ज़माने में यहूदियों की खसलत थी और अब उस के मिस्दाक वहाबिया, दियोबन्दी वगैरा हुमा हैं।

सरकारे अबद करार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया : हर उम्मत में कुछ लोग यहूदी हैं और मेरी उम्मत के यहूदी तक्दीरे इलाही के झुटलाने वाले हैं। (अललालियलमसनूआ)

मफहूमे हदीस से खूब जाहिर कि कुछ लोगों को सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने तक्ज़ीब (झुटलाना) और कितमाने हक (हक को छुपाना) की वजह से यहूदी फरमाया तो वहाबिया वगैराहुम जो हुजूर अलैहिस्सलातु वसल्लाम के इल्मे मौब ही के मुन्किर हैं और दानिस्ता फजाइल छुपाते हैं और जरूरियाते दीन को नहीं मानते यह भी बिला शुबह इस हदीस के मिस्दाक हैं और यह हदीस जिस में फरमाया कि उस का ईमान नहीं जिस के पास दियानत नहीं उन मुन्किरीन के हक में अपने जाहिरी मअ्ना पर है तो उन की कलिमा गोई असलन उन्हें मुफीद नहीं।

ज़ियाबुन फी सियाबिन लब पे कलिमा दिल में गुस्ताखी सलाम इस्लामे मुलहिद को कि तरलीम जबानी है

यहाँ से जाहिर हुआ कि हदीस में कुर्बे कियामत की निशानियों में जो यह फरमाया कि कबीरा गुनाहों को हलाल ठहरायेंगे, यह (जुमला) फिकरए साबिका से मरबूत (तअल्लुक होना) है और दोनों में अलाका सबब व मुसब्ब का है। यअ्नी जब अमानत उन से मसलूब हो जायेगी तो उस का ज़ाए करना यही है कि वह कबीरा गुनाहों में बे परवाही के साथ मुब्तला हो जायेंगे या मआजल्लाह उन्हें दिल से

इलाल जान कर ईमान से दूर और दीन से बे जार हो जायेंगे।

हदीस दोनों मअ्ना को शामिल है और दोनों फरीक हदीस के अलग अलग महमल के एअतिबार से हदीस के मिस्दाक हैं और दूसरा फरीक यअ्नी जो महर्मात कतईया को इलाल जाने मसलूबुल (छीनलीजायेगी)अमानत ईमान से महरूम इस्लाम से खारिज हैं और अल्लाह की अजमत के लिहाज से हर गुनाह और हर मअ्सियत कबीरा है अगर्चे बअज मअ्नी वमुकाबिला बअज कबीरा हैं और बअज सगीरा हैं और कबीरा की जामेअ तअरीफ़(ज्यादा सहीह तअरीफ़)यह है कि वह हर ऐसी मअ्सियत है जिस के मुरतकिब पर किताब व सुन्नत में वईदे शदीद आई और जिस के इरतिकाब से अदालत साकित हो जाती है। जैसे सूदखोरी यतीम का माल खाना, माँ बाप की नाफरमानी, कतअे रहम, जादू, चुगली, झूटी गवाही, और हाकिम के पास नाहक लोगों की शिकायत करना, जिना की दलाली और महारिम के मुआमला में बे गैरती वगैरा यूँ ही वह गुनाह जिस के मुरतकिब पर लअ्नत वारिद हुई उसी तरह हर सगीरा जिस पर इसरार(बा-बार करना) करे और बार बार इस का मुरतकिब हो।

हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं

لا كبيرة مع الاستغفار ولا صغيرة مع الاصرار.

यअ्नी "इस्तिगफ़ार के साथ कोई गुनाह कबीरा नहीं रहता और इसरार के साथ कोई गुनाह सगीरा नहीं रहता" (फैजुलकदीर जिल्द 6 स. 436)

जब सूद खोरी की जाने लगे

यअ्नी कुर्बे कयामत के आसार में से एक निशानी यह भी है कि सूद खोरी आम तौर पर मुसलमानों में पाई जायेगी। मुसलमान एक दूसरे से सूद का लेन देन करेंगे यअ्नी नाप तोल वाली जिन्स को जैसे गेहूँ, सोना, चाँदी वगैरा उसी जिन्स के बदले तफाजुल (ज्यादा लेना) के साथ बेचेंगे ज्यादा लेने की शर्त पर मुसलमान मुसलमान को उधार देगा⁽¹⁾

यहाँ से मअ्लूम हुआ कि सूद मुसलमान और मुसलमान, या मुसलमान और जिम्मी के दरमियान माले मअ्सूम में होता है और उस पर खुद हदीस का पहला फ़िक्र कि "नमाज को ज़ाए करेंगे" करीना है

नीज़ इस हदीस में तसरीह फ़रमाई कि मुसलमान और हरबी काफ़िर के दरमियान सूद नहीं। लिहाज़ा आज कल कुपफ़ार से ज़्यादा लेना सूद की हद में नहीं आता लिहाज़ा उन से बगैर बद अहदी के जो कुछ जिस तरीक़े से मिले वह मुसलमान के लिये जाइज़ है।

1. हज़रत अबूहुरेरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि

قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يأتي على الناس زمان لا يأخذ بالمال الا من اذن الله له यअ्नी फ़रमाया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने लोगों पर एक ऐसा ज़माना आयेगा कि लोग यह खयाल न करेंगे कि उन्होंने ने हलाल हासिल किया या हराम" (मिशकात शरीफ स. 241)

चुनौचे आज बअज़ लोग यह कहते नज़र आते हैं कि "आज कल तो हलाल मिलता ही नहीं" "झूँके हलाल में फूज़ूल खर्ची और ऐश व मरती की गुन्जाइश नहीं रहती। इस लिये लोग यह तावील कर लेते हैं। कि आज कल तो हलाल मिलता ही नहीं"

हालाँकि हदीस पाक में उस की सख्त वईद वारिद है चुनौचे फ़रमाया

रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने : (बाकी अगले सफ़ा पर)

لا يدخل الجنة لحم نبت من السحت وكل لحم نبت من السحت **كانت النار اولى به.** (बाकी अगले सफ़े पर)

जब रिश्वत का लेन देन आम होने लगे

फिर सर कार अलैहिस्सलाम वस्सलाम ने कुर्ब कयामत की एक और निशानी यह बताई कि रिश्वत का लेन देन लोगों में आम होगा गोया उन के नज्दीक वह मअमूली बात हो हालाँकि अल्लाह व रसूल (जल्ल व अला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) के नज्दीक मअमूली बात नहीं बल्कि सख्त हराम है⁽¹⁾

अनी "जन्नत में वह गोश्त नहीं जायेगा जो माले हराम से बना और जो गोश्त हराम में बना हो दोजख उस की ज्यादा मुस्तहक है," (मिशकात शरीफ स 242)

अगर लोग तक्वा शिआरी के जरीआ रिजके हलाल कमाने की फिक करें तो तो मुश्किलात कसबे हलाल में पेश आ रही है इर्गिज न आये मगर हमारा हाल तो यह है कि जो भी हो जैसे भी हो हलाल हो, हराम हो बस हजम करते जाओ (फारुकी मुफिरलह)

1 रिश्वत खोरी इस कदर आम हो चुकी है कि अपने को मजहबी और कौमी हमदर्द कहलाने वाले भी रिश्वत को हृदय का ताम देकर हलाल समझने लगे हैं हालाँकि फुवहा-ए-किराम ने साफ तस्रीह फरमादी है कि जो शख्स किसी को उस के ओहदे पर फाइज होने से पहले रिश्ता दारी वगैरा में कुछ लिया दिया करता था तो उस का लेना जाइज है और ओहदा पर फाइज होने के बाद लोग जो भी देते हैं सब रिश्वत है।

استعمل النبي صلى الله عليه وسلم رجلاً من الازد من الصدقة فلما قدم قال هذا لكم وهذا هدى لي فقال له ابن اللتيبة على الصدقة فلما قدم قال هذا لكم وهذا هدى لي فخطب النبي صلى الله عليه وسلم فحمد الله وأثنى عليه ثم قال أما بعد! فإني استعمل رجلاً منكم على أمور مما ولائى الله فيأتى أحدهم فيقول هذا لكم وهذه هدية أهديت لى فهل أجلس فى بيت ابىه أوبيت امه فينظر ايهدى له ام لا .

अनी "सल्लल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कबीला अजद के इला

कुलबिया नाभी एक शख्स को जकात वसूल करने को भेजा जब वह जकात (बाकी अमले सफे पर)

कुर्आन शरीफ में उस की हुस्नत मुसर्रह(जाहिर तौर बयान की गई) है और हदीस में फरमाया।

يُؤْتِيهِ اللَّهُ مِنَ الْغَيْبِ مَا يَشَاءُ **لَعَنَ اللَّهُ الرَّاشِيَّ وَالْمُرْتَشِيَّ** "अल्लाह की लग्नत है रिश्तत लेने और देने वाले पर"(मुसनदे इमाम अहमद जिल्द 2 स 387)

यज़नी " रिश्तत लेने वाला मुतलकन मुस्तहक़े लग्नत है और देने वाला भी उसी रस्सी में गिरफ्तार है जब कि नाजाइज़ काम के लिए रिश्तत दे या बग़ैर मजबूरी के दे और दफ़अे जुल्म(जुल्म से बचने) और जाइज़ हक़ की तहशील(हक़ हासिल करने के लिए) के लिए जब रिश्तत दिये बग़ैर चारा न हो तो यह सूरत मुस्तसना है और देने वाला इस घईद का भिस्ताक नहीं।

बुसूल कर के लाया तो अज़ किया कि यह बैतुलमाल का है और यह मुझे हदिया दिया गया है यह सुन कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने खुदा दिया और इन्द व सना के बाद इरशाद फरमाया मैं तुम में से दअज लोगों को उन कामों पर मुफरर करता हूँ जिन का अल्लाह ने मुझे मुतादल्ली बनाया है तो उन में से एक आकर कहता है कि यह तुम्हारा है और यह मुझे हदिया दिया गया है तो वह अपने दाप के या माँ के घर क्यों न दूँ गया फिर देखता कि उसे हदया मिलता है या नहीं"। स 156

इस हदैसे पाक से बाजह हुआ कि जो बाज ओहदे की वजह से मिले वह रिश्तत है (फारुकी गुफिरलह)

जब कुर्आन को गाना ठहरा लिया जाये

यअनी तजवीद के कबाइद का लिहाज नहीं रखेंगे और किरात का जो तरीका सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के ज़माने से मुतवारिस(चला आ रहा है) है उस की पैरवी न करेंगे यअनी गाने के तौर पर उतार चढ़ाओ के साथ कुर्आन पढ़ेंगे या साज़ के साथ कुर्आन की तिलावत करेंगे।

बल्कि " इतक़ान फ़ी उलूमिलकुर्आन लिल इमाम जलालुद्दीन सियूती" में है कि लोगों ने तिलावते कुर्आन में गानों की आवाज़ें ईजाद कर लीं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ऐसे लोगों के बारे में फरमाया कि उन के दिल फ़ितनों में हैं और जिन्हें उन का हाल पसन्द हो उन के दिल भी फ़ितने में हैं"।

जो तर्ज उन्होंने ने ईजाद किए उन में से एक का नाम 'तरईद' रखा और वह यह है कि कारी काँपती हुई आवाज़ बनाये गोया वह ठन्डक से या तकलीफ़ से काँप रहा है और दूसरी तर्ज का नाम "तरकीस" रखा और वह यह है कि हर्फ़ साकिन पर सुकूत (ख़ामोशी)का इरादा करे फिर वहाँ से हरकत के साथ चल पड़े गोया वह दौड़ लगा रहा है या तेज़रफ़्तारी में है।

एक तर्ज और निकाला है जिस का नाम "ततरीब" रखा और वह यह है कि कुर्आन करीम को तरन्नुम से और लहज़न से पढ़े उस तौर पर कि जहाँ मद नहीं किया जाता वहाँ मद करे और मद में बे जा खिलाफ़े काइदा ज़्यादती करे और एक तर्ज का नाम "तहज़ीन" है और वह यह कि कुर्आन करीम गुमगीन अन्दाज़ में पढ़े जैसे ख़जूअ व ख़जूअ के साथ रो देता हो।

इमाम सियूती के अल्फ़ाज़ यूँ हैं :

قد ابتدع الناس قراءة القرآن اصوات الغناء (الى ان قال) وقد قال في هؤلاء مفتونة قلوبهم وقلوب من يعجبهم شأنهم ومما ابتدعوه شيء

سموه الترعيد وهو أن يردد صوته كأنه يردد من بردأ و ألم و آخر
 سموه الترقيص وهو أن يروم السكوت على الساكن ثم ينقر من
 الحركة كأنه في عدو أو هرولة و آخر يسمى التطريب وهو أن يترنم
 بالقرآن و يتغنم به فيمد خير مواضع المدريز دقي المد على مالا
 ينبغى و آخر يسمى التحزين وهو أن يأتي على وجه حزين يكاد يبكي
 مع خشوع و خضوع. (اقان: ٢٠٠ ثانی ۱۰۱)

अकूलु (अल्लामा अजहरी फरमाते हैं) उस में कोई हरज न होना
 चाहिए जब कि तजवीद के साथ पढ़ें और क्वाइदे किरात (किरात के
 नियमों) का लिहाज रखे, दिखावा उकसूद न हो, बल्कि बे साख्ता रिक्त
 तारी (रोने जैसी हालत) हो जाये इस लिये कि उलमा ने तसरीह फरमाई
 उन में इमाम जलालुद्दीन सियूती भी हैं जो उसी "इल्कान" में फरमाते हैं
 कि किराते कुर्आन (कुर्आन पढ़ने) के वक़्त रोना गुरतहब है और जो रोने
 पर कादिर न हो वह रोनी सूरत बनाये और हुज़न व
 खुशुअ तिलावत के वक़्त मुद्बय व मद्बय (येहतर) है।

قال الله تعالى :
 "وَيَخْرُونَ لِأَذْقَانِ يَبْكُونَ ."

यअनी "और ठांडी के बल गिरते हैं रोते हुये"

(पारा नं. 15 / सूर अलश आहत 102)

और सहीहान में वह हदीस है जिस में हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने
 मसऊद का नबी अलैहिस्सलातु वरससलाम के लिये कुर्आन पढ़ना
 मजकूर है इस में है कि हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रदियल्लाहु
 तआला अन्हु ने देखा कि नागाह हुज़ूर की आँखों से अशक रवों थे।

और बैहकी "शोअबुलईमान" में सअद इब्ने मालिक से मरफूअन
 रिवायत है कि बेशक कुर्आन हुज़न व बे चैनी की हालत उतरा है तो
 जब तुम उस को पढ़ो तो रोओ फिर अगर तुम्हें रोना न आये तो रोनी
 सूरत बनाओ और उसी में अब्दुलमालिक इब्ने उमैर की मुरसल

महादीरा ने से एक हदीस है कि : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला जलैहि व सल्लम ने फरमाया : "तुम पर एक सूरत तिलावत करता हूँ ता जो रोये उस के लिये जन्नत है फिर अगर तुम्हें रोना न आये तो रात बनों" (रोने जैसी सूरत बनालो)।

और मुस्नदे अबू यअूला में है कि: "कुआन को हुज्ज के साथ पढ़ो इस लिये कि वह हुज्ज के साथ उतरा" और तबरानी में है कि "लागा में सब से अच्छा क़ारी वह है जो क़आन पढ़े तो ग़मगीन हो"।

और "शरहुल मुहज्जब" में फरमाया कि: तहसीले गिरया(रोने की हालत हासिल करने) का तरीका यह है कि जो पढ़ रहा है उस में तहदीद व बईद शदीद और जो अहद व पैमान(डर और गुनाह पर सख्त अज्ञाथ का बयान) हैं उन में गौर करे फिर अपनी कोताही याद करे अब भी अगर रोना न आये और ग़मगीन न हो ता उस बात के न मिलन पर रोये इस लिये कि यह मसाइब में से है।

अल्लामा सियूती **जुसुअल हक़ी** के अल्फाज़ यह हैं।

يستحب البكاء عند قراءة القرآن والتبالي لمن لا يقدر عليه والحزن والخشوع قال تعالى ويحزون للأذقان يبكون وفي الصحيح حديث قراءة ابن مسعود على النبي صلى الله تعالى عليه وسلم وفيه فاذا عيناها تذر فانوفي لشعب للبيهقي عن سعد ابن مالك مرفوعاً أن هذا القرآن نزل يحزن وكآبة فاذا قرأ تموه بكوا فان لم تبكوا فتباكوا وفيه من مرسل عبد الملك بن عمير أن رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم قال أنى فارئ عليكم سورة فمن بكى فله الجنة فان لم تبكوا فتباكوا، وفي مسند أبى يعلى حدث أقرؤ القرآن بالحزن فانه نزل بالحزن وعند الطبراني أحسن الناس قراءة من اذا قرأ القرآن يتحزن قال فى شرح المذهب وطريقه فى

تحصيل البكاء أن يتأمل ما يقرأ من التهديد وعيد
الشديد والمواثيق والعهود ثم يتفكر في تقصيره فيها
فإن لم يحضره عند ذلك حزن وبكاء فليبك على فقد
ذلك فإنه من المصائب (اقتان، جزء ثانی، ص ۱۰۷)

अल्लामा जलालुद्दीन सियूती फरमाते हैं कि उसी(मजकूरा
तरजों)के कबील से एक बिदअत यह है कि बहुत से लोग इकट्ठे हो
व-एक आवाज़ पढ़ते हैं “أَفَلَا تَعْقِلُونَ” को पढ़ते हैं और
“قَالَ آمَنَّا” वाओ के हज़फ़ के साथ (बिगैर वाव के) पढ़ते
हैं जहाँ मद नहीं वहाँ मद करते हैं ताकि जो उन्होंने अपनाया उन का
तरीका बन जाये और मुनासिब यह है उस का नाग तहरीफ़ रखा जाये।

हज़रत इमाम जलालुद्दीन सियूती अलैहिर्रहमा के अल्फ़ाज़ यह हैं
ومن ذلك نوع أحدثه هؤلاء الذين يجتمعون فيقرؤون كلهم
بصوت واحد فيقولون في قوله تعالى “أَفَلَا تَعْقِلُونَ” أفل
تعقلون “بحذف الالف” قال آمنا “بحذف الواو يمدون ما لا
يمد ليستقيم لهم الطريق التي سلکوها وينبغي أن يسمى
التحريف انتهى. (اقتان، جزء ثانی، ص ۱۰۷)

अकूलु(अल्लामा अजहरी फरमाते हैं) वे शक तहरीफ़ है और कस्दन
उस तौर पर पढ़ने वाला मुस्तइक़े तहरीफ़ करार पायेगा।

यहाँ से जाहिर हुआ कि मुजर्रद तहसीनी सौत और खुश
इलहानी जब कि ज़्यादती व नुकसान हुरुफ़ और मद मुफरत और
तमतीत (बेजा खीचतान) (अच्छी आवाज़ और अच्छी तरज जब कि हर्फ़
की कमी और ज़्यादती और बेजा खींच तान न हो तो हरज नहीं)से
पाक हो और कवाइदे कुर्आन की रिआयत की जाये तो उस में हरज
नहीं बल्कि यह मसनून है।

हदीस इब्ने हब्बान वगैरा में है :

”زِينُوا الْقُرْآنَ بِأَصْوَاتِكُمْ وَفِي لَفْظٍ عِنْدَ الدَّارِمِيِّ حَسَنُوا

القرآن باصواتكم فان الصوت الحسن يزيد القرآن حسنا وأخرج البزار وغيره حديث حسن الصوت زينة القرآن وفيه احاديث صحيحة كثيرة فان لم يكن حسن الصوت حسنه ما استطاع بحيث لا يخرج الى حد التمطيط .

यअनी "कुर्आन को अपनी आवाजों से मुजैयन करो और दारमी की एक रिवायत में है कुर्आन को अपनी आवाजों से सँवारों इस लिये कि अच्छी आवाज कुर्आन के हुस्न को बढ़ाती है और बजार वगैरा ने हदीस रिवायत की कि : अच्छी आवाज कुर्आन की जीनत है और अगर कारी खुश आवाज न हो तो जहाँ तक हो सके अच्छी आवाज बनाये पिरने की कोशिश में "तमतीत" की हद तक न पहुँचे (इतकान जुज सानी स. 107)

यहाँ से मअलूम हुआ कि "तमतीत" जो नाजाइज है वह यह है कि मद में बहुत मुवालाग करे और हरकात के अरबाअ में मुबालगा करे यहाँ तक कि जबर से "अलिफ" पेश से "वाओ" जेर से "या" नुमाया हो जाये या जहाँ इदगाम का महल नहीं वहाँ इदगाम करे (एक हर्फ को दूसरे में मिलाने की जगह नहीं वहाँ मिलाकर पढ़ना मद को मद की मिकदार से ज्यादा खींच कर पढ़ना जबर वाले हर्फ को इस तरह पढ़े कि अलिफ हो जाये पेश को इस तरह कि वाओ और जेर को इस तरह कि य हो जाये यह सब तमतीत है जो नाजाइज है)।

नीज हदीस में है सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लाम ने फरमाया :

"اقرأ القرآن بلحون العرب و أصواتها و اياكم و لحون اهل الكتابين و أهل الفسق فانه سيجيئ أقوام يرجعون بالقرآن ترجيع الغناء و الرهبانية (و في نسخة و النوح) لا يجاوز حناجرهم مفتونة قلوبهم و قلوب من يعجبهم

شانهم أخرجه الطبرانی والبيهقي ١

यअनी कुआन को अरबों के तर्ज और उन की आवाज़ के साथ पढ़ो और यहूद व नसारा के तर्ज से अपने आप को दूर रखो और अहले फिरक⁽²⁾ के तर्ज से बचो इस लिये कि कुछ ऐसे आयेगें जो कुआन में गाने की तरह "तरजीअ" (उतार चढ़ाव) से काम लेंगे और अहले रहबानियत के तौर पर पढ़ेंगे कुआन उन के गलों से नीचे न उतरेगा उन के दिल फितनों में पड़े हैं और उन के दिल भी जिन्हें उन का यह हाल भला लगता हो इस हदीस को तबरानी और बैहकी ने रिवायत किया (इतकान जुज़ साग़ी स. 107)

1. इस हदीस पाक को साहिबे मिश्कात ने स. 191/पर और साहिब "तैसीर" ने जिल्द /2 स. 194 पर हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु से इन अल्फ़ाज़ के साथ रिवायत किया :

قال رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم اقرؤا القرآن بلحون العرب واصواتها واياكم ولحون اهل العشق ولحون اهل الكتابيين وسيجيئ قوم يرجعون بالقرآن ترجيع الغناء والرهبانية والنوح لا يجاوز حناجرهم مفتونة قلوبهم وقلوب الذين يعجبهم شانهم

यअनी "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कुआन मजीद अरब के लहनों में पढ़ो और यहूद व नसारा अहले इश्क के लहनों से बचो कि अन्करीब मेरे बन्द कुछ ऐसे लोग आने वाले हैं जो कुआन आ, आ, कर के जैसे गानेकी तानें और राहियों और मरसिया ख़ानों की उतार चढ़ाओ कुआन उन के गलों से नीचे न उतरेगा (यअनी उन के दिलों पर कुछ असर न करेगा) फितने होंगे उन के दिल और जिन्हें उन की यह हरकत (यअनी इस तरह की उतार चढ़ाव वाली किरात) पसन्द आयेगी उन के दिल भी (2) आज यह बात इस के हाफ़िज़ों कारियों में आम तौर से देखी जाती है। कि खुश इलहानी और उतार चढ़ाओ का बड़ा खयाल करते हैं अगघै साल के ग्यारह महीने नमाज़ के करीब तक न गये दाढ़ी मुन्डवाई, हराम का इश्तिकाब किया और रमजान आते (दाढ़ी अगले सफ़ा पर)

तिलावत में एक मजमूम तरीका यह भी है कि औरतों की आवाज़ बना कर तिलावत करे यह खुद नाजाइज़ है तशब्बोह की वजह से और गाने की तर्ज पर होने की वजह से। उलमा फरमाते हैं कि तफ़ख़ीम के साथ पढ़ना मतलूब है इस लिये हाकिम की हदीस में है :

نزل القرآن بالتفخيم قال الحلبي ومعناه أنه يقرأ على قراءة الرجال ولا يخضع الصوت فيه كلام النساء.

यअ़नी कुर्आन तफ़ख़ीम के साथ उत्तरा हलीमी ने फरमाया तफ़ख़ीम का मअ़ना यह है कि कुर्आन को मर्दों की तिलावत के तर्ज पर पढ़े और उस में औरतों की बोली की तरह आवाज़ परत न करे।

ही मुसल्ला पर खड़े कुर्आन सुनाने लगे हद तो यह है कि अ़वाम भी सही पढ़ने वाले कारियों को छोड़ कर गाने जैसी किरात और औरत जैसी आवाज़ वाले पढ़ने वालों को पसन्द करते हैं भले ही वह मख़ारिज की सहीह अदायेगी और तजवीद(किरात के फायदे)से ना बलद (अन्जान) हों (फ़ारुकी गुफ़िरलह) (इतकान, जुज़ सानी स 107/108)

JANNATI KAUN?

जब औलाद दिल की घुठन हो जायें

इस से मुराद औलाद में ⁽¹⁾नाफरमानी की कसरत है माँ बाप की नाफरमानी अल्लाह जब्बार व कहहार की नाफरमानी है और उन की नाराज़गी अल्लाह कहहार की नाराज़गी है। आदमी माँ बाप को राज़ी कर ले तो वह उस के लिये जन्नत हैं और अगर नाराज़ कर दे तो वही उस के लिये बाइसे दोज़ख हैं।

जब तक माँ बाप को राज़ी न करेगा, उस का कोई फ़र्ज़ कोई नफ़ल, कोई अमले नेक असलन कबूल न होगा। अज़ाबे आख़िरत के अलावा दुनिया में ही जीते जी उस पर सख़्त बला नाज़िल होगी। मरते वक़्त मआज़ल्लाह कलिमा नसीब न होने का ख़ौफ़ है।

हज़रत अबूहुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने :

”طاعة الله طاعة الوالد ومعصية الله معصية الوالد“

“अल्लाह की इताअत वालिद की इताअत है और अल्लाह की मअसियत 1. आज वालिदेन के साथ नाफरमानी का मुआमला भी आसानी से मुशहिदा किया जासकता है जबकि वालिदेन की नाफरमानी तो दर किनार कुर्आन अजीम ने उन से ऊँची आवाज़ में बात करने बल्कि उफ़ या हूँ तक कहने की सख़्त मुमानअत फ़रमाई है वुनौचे इरशाद बारी तआला है :

وَلَا تَقُلْ لَهُمَا آفٍ وَلَا تَنْهَرُهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا .

यअनी “तू उन से हूँ न कहना और उन्हें न डाड़कना और उन से तअज़ीम की बात कहना” (पारा न 15/सूर असर/आयत न 23 कनज़ुलइमान)

लेकिन आज मुआमला दिलकुल उस के बर अक्स है हम ने ऐसे बेटों को भी देखा है जो बुढ़ापे में अपने वालिदेन की खिदमत व इताअत करने की बजाये उन्हें तरह तरह की अजियतें देते हैं बीमार माँ बाप दवा बगैरा तक के लिये मोहताज हैं। कोई पुरस्ताने हाल नहीं हत्ता कि अपनी बीबी की खुशनूदी के लिये उन्हें मारपीट कर घर से भी निकाल देते हैं जो उन की दुनिया व आख़िरत की बर्दादी का सबब है। वुनौचे खुद उसी हदीस में उसे कयामत की निशानियों में शुमार फ़रमाया कि नर्द अपनी बीबी की इताअत करे और माँ की नाफरमानी करे और बाप को दूर रखे (फारुकी गुफ़िरलइ)

वालिद की (नाफरमानी) मअसियत है (तफ्सीर अल-बुखारी जिल् ३ पृ १३६)

नीज फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने:

”كُلِّ الذَّنُوبُ يُوْخِرُ اللّٰهُ مَا شَاءَ مِنْهَا اِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ اِلَّا عَقْرَ الْاُنْثَى فَاِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى يَعْجِلُهُ لِمَا حَبَهُ فِي الْحَيَاةِ قَبْلَ الْمَمَاتِ.

यअनी (कल) (कल) की सजा (कल) (कल) तआला चाहे तो कयामत के लिये उठा रखता है मगर भों वाप की (नाफरमानी) की सजा उस के जीते जी (दुनिया ही में) पहुँचाता है” (तफ्सीर मुस्तदरक जिल् ३ पृ १३६)

नीज फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने:

”مَلْعُونٌ مَنْ عَوَّى وَالِدِيْهِ ، مَلْعُونٌ مَنْ عَوَّى وَالِدِيْهِ، مَلْعُونٌ مَنْ عَوَّى وَالِدِيْهِ.

यअनी “मलऊन है वह जो अपने वालिदैन को सताये मलऊल है वह जो अपने वालिदैन को सताये मलऊन है वह जो अपने वालिदैन को सताये” (तफ्सीर अल-बुखारी जिल् ३ पृ २८७)

JANNATI KAUN?

इमाम उल्ला सुन्नत अल्ला हजरत इमाम अहमद रजा खॉ कादरी बरेलवी कुद्देस सिरूहुल अजीज फरमाते हैं:

वालिदैन के साथ नेकी सिर्फ यही नहीं कि उन के हुक्म की पाबन्दी की जाये और उन की मुखालफत न की जाये बल्कि उन के साथ नेकी यह भी है कि कोई ऐसा काम न करे जो उन को नापसन्द हो अगर्चे उस के लिये खास तौर पर उन का कोई हुक्म न हो। इस लिये कि उन की फरमाँबरदारी और उन को खुश रखना दोनों वाजिब हैं। और नाफरमानी और नाराज करना हराम है” (हक्क वालिदैन स ३८)

वालिदैन उस के लिये अल्लाह जल्ल शानुहू और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथे और उन की रबूबियत व रहमत के मजहर हैं यही वजह है कि कुआन अजीम में अल्लाह जल्ल जलालुहू ने अपने हक के साथ उन का हक भी जिक्र फरमाया:

ہک مان مہرا اور اپنے ماں باپ کا۔ **اَن اَشْكُرْ لِيْ وَالذِّیْكَ**

(پارا ۛ 21 / سورۃ لکمان آیت 14 کھجولہ مان)

ہدی سے پاک میں ہے کہ : ایک سہابی-ع-رسول نے ہاجرہ
 خیدمت ہو کر ارج کی یا رسول اللہ اک راہ میں ۛسے گرم پتھروں
 پر کہ اگر گوشت ان پر ڈالا جاتا کباب ہوجاتا میں ۛ: مہل
 تک اپنی ماں کو اپنی گردن پر سوار کر کے لے گیا ۛں کھا میں
 اب اس کے ہک سے اوہدا برآ(کھا میں ہک ادا کر دیا) ہو
 گیا ؟ یرشاہ ہوا :

یٰۛنی "تہرہ پءا ہونہ میں جس کدر دہ : **لعلہ ان یكون بطلقة واحدة** :
 کے ہٹکے اس نے اٹایہ ۛں شاہد ان میں سے اک ہٹکے کا بدلا ہو
 سکے۔ (مجموعہ جہاد جی. 8 ص 137)

بیلجولما والیدین کا ہک وہ نہیں کہ ینسان اس سے
 اوہدا برآ ہو(انکے ہک سے ہٹکارا پا سکے) سکے وہ اس کی
 ہیاہ و ووجود کے سبب ۛں تو جو کۛھ نے امتیں دینی و دنیایہ
 پایگا سب انہیں کے توفیل میں کہ ہر نے امت و کمال ووجود پر
 مہکف ۛں اور ووجود کے سبب وہ ہۛے تو سیرف ماں باپ ہونا ہی ۛسے
 اجم ہک کا مہیب ۛں جس سے کبہ بریہ جیمما(ہٹکارا پانا)
 نہیں ہو سکتا نہ کہ اس کے ساہ اس کی ہرہریش میں کوشیش اس
 کے آرام کے لیه ان کی تکلیفیں ۛسوسن پٹ میں رخنہ پءا کرنے
 دۛھ پیلانہ میں ماں کی اجیہتیں ان کا شک کھا تک ادا ہو
 سکتا ۛں؟

जब उलमा अहले सरवत के लिये सीनों पर हाथ बाँधे झुकें

इस से मुराद उलमा के गिरोह में वह फुरसाक हैं जो माल व जाह के लालच में अहले सरवत के लिये झुकेंगे जिस का नतीजा यह होगा कि इलाल को हराम और हराम को हलाल ठहरायेंगे और दुनिया दारों को उन की ख्वाहिश के मुवाफिक फूतवा देंगे जैसा कि आगे उसी हद्दीस में बयान हुआ उस से मकसूद उलमा और अवाम दोनों की तहजीर व तम्बीह(डराना और नसीहत देना) है।

इमाम जलालुद्दीन सियूती हजरत अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक से

“सबद व हिदायत की राह से भटकने वाले उलमा सू (दुरे उलमा) ही उनमून सर माया दारों के पास जाते हैं और वन्द टकों की खातिर अपना फजल व वकार उन के पास गिरवी रख देते हैं। धुनोंवे फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने

ان اناسا من امتى سيتفقون في الدين ويقرؤون القرآن
ويقولون فاتى الامراء فنصيبنا من ديننا هم ونعتزلهم بديننا ولا يكون
ذلك كما لا يجتنى من القنادر الا الشرک كذلك لا يجتنى من قريبهم .

यअनी “मेरी उम्मत में कुछ ऐसे लोग होंगे जो दीन की समझ हासिल करेंगे और कुआन पढ़ेंगे फिर सरमाया दारों के पास जायेंगे और कहेंगे कि हम सरमाया दारों के पास जाते हैं और उन से दुनिया हासिल करते हैं और अपना दीन बचा कर अलग हो जाते हैं हालाँकि ऐसा ही ही नहीं सकता जिस तरह कताद(एक काँटे दार दरख्त) से काँटा के सिवा कुछ नहीं मिल सकता उसी तरह सरमाया दारों के करीब रहने से कुछ नहीं हासिल हो सकता” (सुनन इब्ने माजा स 23)

हजरत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं।

لوان اهل العلم صابوا العلم ووضعوه عند اهل لساد وابه اهل زمانهم
ولكنهم بذلوه لاهل الدنيا ليتا لوابه من دنياهم فها نوا عليهم .

यअनी “अगर उलमा अपना इल्म महफूज रखते और उसे जी सलाहियत इनसानों पर खर्च करते तो जमाना के सरदार बन जाते मगर उन्होंने दुनिया के हुसूल के लिये अपना इल्म अहले दुनिया पर खर्च किया जिस की वजह से अहले जमाना की नजरों में जलील व ख़्बाह हो गये। (मिशकात शरीफ स 37) (शकी अगले सफा पर)

अपनी किताब "अललालियुलमसूआ" में हदीस रिवायत करते हैं जिस को उन्होंने अबू मुअिन से रिवायत किया। उन्होंने ने कहा मुझ से हदीस बयान की सुहैल इब्ने हरसान कलबी ने कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया बेशक वह चिकनी फिसलनी चट्टान जिस पर उलमा के पैर नहीं जमते "तमअ" है(लालच)। हदीस के अल्फाज यह हैं।

"عن ابى معن عن اسامة بن زيد مرفوعاً ان الصفا الزلال لا هل العلم الطمع لأصع: محمد بن مسلمة ضعيف جدا وكذا خارجة (قلت) اخرج ابن المبارك فى الزهد عن ابى معن قال حدثنى سهيل بن حسان الكلبي ان رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم قال ان الصفا الزلال الذى لا يثبت عليه اقدام العلماء الطمع والله اعلم" (اللاالى المصنوعة، جلد اول ص ۲۱۰)

उसी में हजरत अनस से मरफूअन मरवी है कि उलमा अल्लाह के रसूलों के बन्दों के पास अमीन हैं- जब तक बादशाह से न मिलें और दुनिया में दखल न दें तो जब दुनिया में दखल देने लगें और बादशाहों से मिल जायें तो बेशक उन्होंने ने रसूलों के साथ खयानत की तो उन से दूर रहो। हदीस के अल्फाज यह हैं।

आज यह मन्जर भी हमारी निगाहों के सामने है कि उलमा ने आखिरत से बे फियर हो कर इस फानी दुनिया का हुसूल ही अपने इल्म का मकसद बना रखा है और सियासी लीडर बनने और शोहरत व दीलत हासिल करने में सर गरदौ हैं बअज नाआकैबत अन्देश नाम निहाद उलमा अखबारात में छपना अपनी मेअ्राज तसव्वुर करते हैं और तरह तरह के लायअनी और गुमराह कुन बयानात दे कर कौम और जिम्मादाराने कौम को बदनाम करते हैं (फारुकी गुफिरलहु)सियासी लीडर बनने की

”عن انس مرفوعا العلماء أمناء الرسل على العباد ما لم يخالطوا سلطانا ويدخلوا في الدنيا فاذا دخلوا في الدنيا وخالطوا السلطان فقد خانوا الرسول فاعتزلوهم“

(الآلئ المصنوعة، جلد اول ص ۲۱۹)

मगर सारे उलमा का यह हाल न होगा 'बुखारी शरीफ' की हदीस में वारिद हुआ जो इज्जरत अमीर मुआविया से मरवी है कि सर कार अलैहिस्सलातु वरससलाम ने फरमाया अल्लाह जिस से भलाई का इरादा फरमाता है उस को फकीह (दीन की समझ रखने वाला) बनाता है और मैं तो बाँटने वाला हूँ अल्लाह देता है! मेरी उम्मत का एक गिरोह अल्लाह का हुक्म आने तक अल्लाह के दीन पर काइम रहेगा उन के मुखालिफ उन्हें कुछ न नुकसान पहुँचा सकेंगे।

हदीस पाक के अल्फाज़ यह हैं।

”عن ابن شهاب قال قال حميد بن عبد الرحمن سمعت معاوية خطيبا يقول سمعت النبي صلى الله تعالى عليه وسلم يقول من يرد الله به خيرا يفقهه في الدين وانا انا قاسم والله يعطى ولن تزال هذه الامة قائمة على امر الله لا يضرهم من خالفهم حتى يأتي امر الله“ (بخاری شریف جلد ۱ ص ۶۱)

इस हदीस से ज़ाहिर होता है कि क़यामत तक ख़यारे उलमा (अच्छे उलमा) जो शरीअत के पासवान और दीन के फकीह हैं होते रहेंगे वह खुद दीन पर काइम रहेंगे और उन की बरकत से उन के सच्चे मुत्तबईन कि अहले सुन्नत व जमाअत हैं दीन पर काइम रहेंगे।

इस पर खुद इसी हदीस में करीना मौजूद कि फरमाया कुर्रा ब—कसरत होंगे और फुवहा कम रह जायेंगे जिस से साफ़ ज़ाहिर है कि ऐसे लोग क़यामत आने तक आते रहेंगे और यह जो फरमाया कि क़ारी ब—कसरत होंगे फिकरा—ए—साबिका (पिछले जुमले) से मिलाने पर यह समझ में आता है कि क़ारियों की कसरत से ऐसे लोग मुराद हैं जो कुर्आन तो पढ़ेंगे लेकिन उस के मअ्ना में फहम व तदब्बुर (सूझ

बूझ) से काम न लेंगे और उस तरह सहाबा किराम का वह तरीका जो हुजूर अलैहिस्सलाम वरसलाम से उन्होंने लिया और उन के मुत्तबेईन में (अनुयाईयों) राइज हुआ मतरूक हो जायेगा।

हजरत अबू अब्दुरहमान सुलमी रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है उन्होंने फरमाया हम से हदीस बयान की उन सहाबी ने जो हम को कुर्आन पढ़ाते थे कि वह लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से दस आयतें सीखते थे तो दूसरी दस आयतों की किरात न शुरू करते जब तक कि जो उन में इल्म व अमल है जान नहीं लेते। उन्होंने ने फरमाया तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हम को इल्म व अमल दोनों की तअलीम देते थे।

इस हदीसे पाक से साबित हुआ कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को काइनात के तमाम वाकिआत की खबर है, माजी व मुस्तकबिल (भूतकाल व भविष्यकाल) सब का इल्म है आलम का जर्रा जर्रा पेशे नजर है कबे कयामत की निशानियाँ और खुद कयामत सब मुशाहिदा में हैं।

उलमा फरमाते हैं कि सर कार अलैहिस्सलाम वरसलाम दुनिया से तशरीफ न ले गये मगर इस हाल में कि अल्लाह ने हुजूर को उस से मुत्तलअ फरमादिया कि कयामत कब आयेगी उस की तअईन (वक्त खास करना) लोगो से पोशीदा रखने का सर कार अलैहिस्सलाम वरसलाम को हुक्म दिया बल्कि बअज़ अहादीस से कयामत के अहवाल का भी पेशे नजर होना साबित है।

उलमा-ए-किराम की इस राय की ताईद एक दूसरी हदीस से मुस्तफाद (हासिल) होती है यह हदीस हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है जो " कन्जुलउम्माल" जि. 14 स. 583/ पर मौजूद और ख़ासी (काफी) तवील है।

इस में हजरत ईसा अला नबियिना अलैहिस्सलाम वरसलाम

के दफन के थोड़े अरसा बाद एक हवा का ज़िक्र है जो यमन की तरफ से चलेगी रुखे ज़मीन पर जितने मुसलमान उस वक़्त होंगे यह हवा उन की रुह कब्ज़ कर लेगी और कुआँन को एक ही रात में उठालिया जायेगा तो इन्सानों के सीनों में और उन के घरों उस में से कुछ न रहेगा तो ऐसे लोग रह जायेंगे जिन में न कोई नबी होगा न कुआँन का इल्म होगा और न उन में कोई मुसलमान होगा।

इजरत अब्दुल्लाह इब्ने अम्र व इब्ने आस ने फरमाया तो यहाँ पर हम से कियामत के बरपा होने का वक़्त छुपालिया गया तो हम नहीं जानते कि उन लोगों को कितनी मुहलत दी जायेगी।

हदीसे पाक के अल्फाज़ यह हैं :

”عن عبد الله بن عمرو أن رجلاً قال له أنت الذي تزعم أن الساعة تقوم إلى مائة سنة قال سبحان الله و أنا أقول ذلك ومن يعلم قيام الساعة إلا الله إنما قلت ما كانت رأس المائة للخلق منذ خلقت الدنيا إلا كان عند رأس المائة أمر. قال ثم يوشك أن يخرج ابن حمل الضأن، قيل وما ابن حمل الضأن؟ قال رومي أحد أبويه شيطان، يسير إلى المسلمين في خمس مائة ألف بحراً حتى ينزل بين عكا وصور ثم يقول يا أهل السفن اخرجوا منها، ثم أمر بها فأحرقت، ثم يقول لهم لا قسطنطينية لكم ولا رومية حتى يفصل بيننا وبين العرب، قال فيستمد أهل الاسلام بعضهم بعضاً حتى تمدهم عدن أيين على قلاصاتهم فيجتمعون فيقتتلون فتكائبهم النصارى الذين بالشام ويخيرونهم بعورات المسلمين فيقول المسلمون الحقوا فكلكم لند عدو حتى يقضى الله بيننا وبينكم، فيقتتلون شهرًا لا يكل لهم سلاح ولا لكم ويقذف الطير عليكم وعليهم قال و

بلغنا انه اذا كان رأس الشهر قال ربكم اليوم أسل
 سيفي فأنقم من أعدائي وأنصر أوليائي، فيقتلون
 مقتلة مارثي مثلها قط حتى مات سير الخيل الا على
 الخيل وما يسير الرجل الا على الرجل، وما يجدون
 خلقا يحول بينهم وبين القسطنطينية ولا رومية، فيقول
 أميرهم يومئذ لا غلول اليوم، من أخذ اليوم شيئاً فهو
 له، قال فيأخذون ما يخف عليهم ويدعون ما ثقل عليهم
 فيينما هم كذلك اذ جاءهم ان الدجال قد خلفكم
 في ذرار بكم، فيرفضون ما في أيديهم ويقبلون، و
 يصيب الناس مجاعة شديدة حتى أن الرجل ليحرق و
 ترقوسه فيأكله، وحتى أن الرجل ليحرق حافته
 فيأكلها، وحتى أن الرجل ليكم أخاه فما يسمعه الصوت
 من الجهد، فيينما هم كذلك اذ سمعوا صوتاً من السماء
 أبشروا فقد أتاكم الغوث فيقولون: نزل عيسى ابن مريم
 فيستبشرون ويستبشريهم صل يا روح الله فيقول ان الله
 اكرم هذه الأمة فلا ينبغي لأحد أن يؤمهم الا منهم،
 فيصلي وأمير المؤمنين بالناس قيل وأمير الناس يومئذ
 معاوية بن ابي سفيان قال لا يصلّي عيسى خلفه فاذا
 نصرف عيسى دعا بحربته فأتى الدجال فقال رويدك يا
 دجال يا كذاب فاذا رأى عيسى وعرف صوته ذاب كما
 يذوب الرصاص اذا اصابته النار و كما تذوب الالية اذا
 اصابتها الشمس ولو لا انه يقول رويد الذاب حتى لا
 يبقى منه شيء، فيحمل عليه عيسى فيطعن بحربته بين
 ثديه فيقتله ويفرق جنده تحت الحجارة والشجرة و
 عامة جنده اليهود والمنافقون فينادي الحجر يا روح
 الله هذا تحتي كافر فاقتله فيأمر عيسى بالصلب فيكسر

وبالخنزير فيقتل وتضع الحرب اوزارها حتى ان
 الذئب ليربض الى جنبه ما يغمز بها ، وحتى أن الصبيان
 يلعبون بالحيات ماتنهشهم ، ويملا الأرض عدلاً
 فيبينماهم كذا لك اذ سمعوا صوتاً قال فتحت يا جوج و
 مأجوج وهو كما الله تعالى (وهم من كل حذب
 ينسلون) فيفسدون الارض كلها حتى ان اوائلهم ليأتي
 انهر العجاج فيشربونه كله وان آخرهم ليقول قد كان
 ههنا نهر ويحاصرون عيسى ومن معه بيت المقدس و
 يقولون ما نعلم في الارض احد الا ذبحناه هلموا نرمي
 من في السماء فيرمون حتى ترجع اليهم سهامهم في
 نصولها الدم للبلاء فيقولون ما بقي في الارض ولا في
 السماء فيقول المؤمنون يا روح الله ادع عليهم بالفناء
 فيدعو الله عليهم فيبعث النصف في آذانهم فيقتلهم في
 ليلة واحدة فتنتن الارض كلها من جيفهم فيقولون يا
 روح الله نموت من التنن فيدعو الله ، فيبعث وابل من
 المطر فجعله سيلاً فيقذفهم كلهم في البحر ثم يسمعون
 صوتاً فيقال مه ؟ قيل غزى البيت
 الحصين فيبعثون جيشاً فيجدون اوائل ذلك الجيش و
 يقبض عيسى ابن مريم ووليه المسلمون وغسلوه و
 حنطوه وكفنوه وصلوا عليه وحفروا له ودفنوه ، فير
 جع اوائل الجيش والمسلمون ينفضون ايديهم من
 تراب قبره ، فلا يلبثون بعد ذلك الا يسيرا حتى يبعث
 الله الريح اليمانية ، قيل وما الريح اليمانية ؟ قال ريح
 من قبل اليمن ليس على الارض مؤمن يجد نسيمها الا
 قبضت روحه قال ويسرى على القرآن في ليلة واحدة
 ولا يترك في صدور بني آدم ولا في بيوتهم منه شيء الا

رفعه الله فيبقى الناس ليس فيهم نبي وليس فيهم قرآن
وليس فيهم مؤمن قال عبد الله بن عمر وفعد ذلك
أخفى علينا قيم الساعة فلا ندرككم يتركون كذا أنت
تكون السيحة قال ولم يكن سيحة قط الا بغضب من
الله على اهل الارض قال وقال الله تعالى (وما ينظر
هؤلاء الا صيحة واحدة ما لها من فواق) سورة ص آية
١٥ قال فلا أدري كم يتركون كذلك. (کنز العمال جلد ۱۳ ص ۵۷۰)

इस हदीस से ज़ाहिर है कि सहाबा किराम अपने बारे में यह
ख़बर दे रहे हैं कि उन से कयामत का वक़्त छुपा लिया गया और
छुपाने वाले हुज़ूर अलैहिस्सलाम वस्सलाम हैं तो यह छुपाना इस अम्र
(वात)की दलील है कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम
को कयामत के बरपा होने के वक़्त की ख़बर थी मगर बताने का हुक्म
न था इस लिये सहाबा किराम से छुपाया।

“बुखारी शरीफ” क़ितायुह बुज़ू में इज्जत असमा बित्ते अबूबक़ से
हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कोई ऐसी चीज़
नहीं जो मैंने अब से पहले न देखी थी मगर यह कि उन को ऐसे
मक़ाम पर देखा यहाँ तक कि जन्नत,दोज़ख़ का मुशाहिदा
फ़रमालिया और बे शक़ मेरी तरफ़ वही आती है कि तुम अपनी कब्रों में
आज़माये जाओगे दज्जाल के फ़ितना या उस के करीब तुम में से हर
एक के पास फ़रिश्ते आयेंगे तो पूछा जायेगा उस शख्स के बारे
में(यअनी हुज़ूर के बारे में)तुम्हारा क्या इल्म है ? तो मोमिन या
मोकिन(शक़े रावी)कहेगा कि यह मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि
वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं हमारे पास राशन निशानियाँ और
हिदायत ले कर आये तो हम ने उन का कहा माना और ईमान लाये
और उन की पैरवी की तो उस से कहा जायेगा सोजा भला चंगा उस
से कहा जायेगा कि हमें मज़लूम था वेशक़ तू मोमिन है। और मुनाफ़िक़

या मुरताब(शके राती)कहेगा मैं नहीं जानता मैंने लोगों को कुछ कहते सुना ता मैं ने वहीं कहा।

हदीस प्राक के अल्फाज़ यह हैं :

”عن جدتها اسماء بنت ابی بکر انها قالت اتيت عائشة زوج النبي صلى الله تعالى عليه وسلم حين خسفت الشمس فاذا الناس قيام يصلون فاذا هي قائمة تصلي فقلت ما للناس فاشارت بيدها نحو السماء وقالت سبحان الله فقلت اية فاشارت ان نعم فقممت حتى تجلاني الغشي و جعلت اصب فوق راسي ماء فلما انصرف رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم حمد الله واثنى عليه ثما قال ما من شيء كنت لم اراه الا قدر أية في مقامى هذا حتى الجنة والنار ولقد وحى الى انكم تفتنون في القبور مثل او قريبا من فتنة الدجال لا ادرى اى ذلك قالت اسماء يؤنى احدكم فيقال له ما علمك بهذا الرجل فاما المؤمن او المؤمن لا ادرى اى ذلك قالت اسماء فيقول هو محمد رسول الله جاءنا بالبينات والهدى فاجبنا وامنوا اتباعنا فيقال نعم صالحا فقد علمنا ان كنت لمؤمننا واما المنافق او المرتاب لا ادرى اى ذلك قالت اسماء فيقول لا ادرى سمعت الناس يقولون شيئا فقلته“ (بخارى شريف جلد اول ص ۳۷۳)

जब मस्जिदें आरास्ता की जायें

यहाँ यह बात काबिले जिक्र है कि क़ुर्ब कयामत की निशानियों में जो बातें शुमार की गईं वह सब ना जाइज व हराम नहीं। उन में कुछ वह भी हैं जो जाइज व मुबाह हैं मसलन मुसहफ़ शरीफ को सोने चाँदी से मुज़य्यन करना और मस्जिद को नक़श व निगार से आरास्ता करना अग्रे मुबाह है ⁽¹⁾। (हदी बुख़ारि जिल्द ६ पृ ३८६) मे है

و جاز تحلية المصحف (ای بالذهب و الغضة) لما فيه من تعظيمه كما في نقش المسجد .

यअनी "मुसहफ़ को उस की तअज़ीम की खातिर सोने और चाँदी से मुज़य्यन करना जाइज है जैसे मस्जिद को आरास्ता करना"

और मस्जिद के नक़श व निगार के जवाज़ पर खुद इब्दीस इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हुमा शाहिद (गवाह) है कि फरमाया **لتنزخرفنها** तुम जरूर मस्जिदों को मुनक़श करोगे और हुज़ूर अलैहि ससलातु वरसलाम से इस अम्र की मुमानअत नक़ल न फरमाई।

1 लेकिन अफ़सोस कि आज हमारी मस्जिदें दिल को मुन्तशिर कर देने वाले रंग बिरंगे टाइल्स दीदा जेब झालर व फ़ानूस हफ़त रंग कुमकुमों दिल फरेब मर मरी फ़र्श घेरा दह्रा नवश व निगार वाले पर्दा ऊँचे ऊँचे भीमारों और दीगर दुनियावी जेब व जीन्स और आराम व राहत की चीज़ों से तो आबाद हैं मगर नमाज़ियों से यक़सर वालों के राह जहा है किती कल्ले जाले ने

मस्जिद तो बनाली राद भर में ईमों की इरास्त वालों ने

मन अपना पुराना पार्षा था वरसों में नमाज़ी बन न सका

और जो नमाज़ी हैं वह दुनिया की सारी बातें ले कर मस्जिद ही में बैठ जाते हैं हालाँकि फ़ुक्हा-ए-किराम ने मस्जिद में दुनिया की जाइज बातें भी करना समनुअ़ करार दी हैं।

और कयामत की निशानियों में से यह भी कि लोग मस्जिदों में दुनिया की बातें करेंगे चुनौते कन्ज़ुलउम्माल जि 14 में है :

खुद हजरत असमान इब्ने अपफान रदियल्लाहु तआला अन्हु को अमल इस के जवाज पर शाहिदे अदल(गवाह) है। बुखारी शरीफ में है कि मस्जिद हुजूर अलैहिस्सलातु वरसलाम के जमाने में कच्ची ईंट की बनी थी और इस की छत खजूर के पत्तों की थी और सुतून खजूर की लकड़ी के थे। फिर हजरत अबूबक रदियल्लाहु तआला अन्हु ने इस में कुछ ज्यादा न किया और हजरत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु ने इस में तौसीअ(बढ़ाना)फरमाई और इस को इसी तौर पर बनाया ईंट और खजूर के पत्तों से जैसी हुजूर अलैहिस्सलातु वरसलाम के जमाने में थी और उसके सुतून लकड़ी के उसी तौर पर रखे।

फिर हजरत उसमान रदियल्लाहु तआला अन्हु ने उस की बहुत तौसीअ तौसीअ(चौड़ीकरण)और फुस की दीवार को मुनक्कश पत्थर और चूने से बनाया और उस के सुतून नकशी(नक्श वाले)पत्थर के बनाये और बेश कीमत लकड़ी की छत बनाई।

لا تقوم الساعة حتى يتباهى الناس في المساجد . यानी "क्यामत उस

वक्त तक न आयेगी जब तक लोग मस्जिदों में फखरिया बातें न करने लगेँ"

बैहकी ने "शौअबुलईमान" में इमाम हसन बसरी से रिवायत की कि फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने लोगों पर एक ऐसा जमाना आयेगा कि मस्जिदों में दुनियावी बातें हुआ करेंगी तुम उन के पास न बैठना कि अल्लाह को उन की कोई घरवाह नहीं।(वहारे शरीअत जि.1 हिस्सा 3 स. 181) नीज फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कि :

اذا زخر فتم مساجدكم و حلّيتم مصاحفكم فالدمار عليكم.

यानी जब तुम अपनी मस्जिदों को सजाने लगे और कुरआन को दीदा जेब बनाने लगे तो समझ लो कि तुम्हारी हलाकत का वक्त करीब है(कन्जुलउम्माल जि. 14 स. 210 (फारुकी गुफिरलहु)

हदीसे पाक के अल्फाज यह हैं।

عن عبد الله بن عمر اخبره ان المسجد كان على عهد رسول الله تعالى عليه وسلم مبنيا باللبن وسقفه الجريد وعمده خشب النخل فلم يزد فيه ابوبكر شيئا وزاد فيه عمر وبناء على بنيانه في عهد رسول الله تعالى عليه وسلم باللبن والجريد واعاد عمده خشبا ثم غيره عثمان فزاد فيه زيادة كثيرة وبنى جداره بالحجارة المنقوشة والقصة وجعل عمده من حجارة منقوشة وسقفه بالساج. (بخاری شریف جلد اول ص ۶۴)

यहाँ से मअलूम हुआ कि हर नई बात जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तअला अलैहि वसल्लम के ज़माने में न थी नाजाइज़ नहीं बल्कि यह (बिदअत) कभी वाजिब होती है जैसे गुमराहों के रद के लिये दलाइल काइम करना और किताब व सुन्नत को समझने के लिये नहव व सर्फ (अरबी सीखने के काइदे) वगैरा मबादी को सीखना और कभी मुस्तहब होती है जैसे सराये और मदरसे बनाना और हर वह नेकी जो सदरे अव्वल में न थी और कभी मकरु होती है जैसे एक क़ौम पर मरिजद का नक्श व निगार और कभी मुबाह होती है जैसे लज़ीज़ खाने कपड़े और तोसिक वगैरा कमा फ़ी(रद्दुल मुइतार)

और जाब्ता यह है कि जिस चीज़ से अल्लाह व रसूल जल्ल व अला व सल्लल्लाहु तअला अलैहि वसल्लम ने सख़्ती के साथ मनअ फ़रमाया वह मननूअ व नाजाइज़ है और जिस से मनअ न फ़रमाया वह मननूअ नहीं बल्कि मुबाह है और “الاصل في الاشياء اباحة” अश्या में असल इबाहत है।

जब महीने घट जायें

“मजमअ बिहारूलअन्वार” में है : अहले हयअत ने कहा कि दाइरातुलबुरुज दाइरा मअदलुन्नहार पर मुस्तकबिल में मुन्तबिक हो जायेगा। तौजीह इस मकाम की यह है कि कुतबे शुमाली और कुतबे जुनूबी के दरमियान एक दाइरा अजीमा माना गया है जिस का फरसल दोनों कुतबों से बराबर है यअनी वह दाइरा अजीमा कुतबे शुमाली से 90 दर्जा पर है और कुतबे जुनूबी से भी 90 दर्जा पर है उसी दाइरा-ए-अजीमा का नाम दाइरा-ए-मअदलुन्नहार है।

12 मार्च और 24 सितम्बर को आफताब दाइरा-ए-मअदिलुन्नहार पर हरकत करता है 22 जून को आफताब जिस नुक्ते से तुलूअ करता है उस नुक्ते से 23 दर्जा 27 दकीका जुनूब में मअदिलुन्नहार है

यूही 22 जून को जिस नुक्ते पर आफताब गुरुब करता है उस नुक्ते से भी 23 दर्जा 27 दकीका जुनूब में मअदिलुन्नहार है और 22 दिसम्बर को आफताब जिस नुक्ते से तुलूअ करता है उस नुक्ते से 23 दर्जा 27 दकीका शिमाल में मअदिलुन्नहार है।

यूही 22 दिसम्बर को जिस नुक्ता पर आफताब गुरुब करता है उस नुक्ता से भी 23 दर्जा 27 दकीका शुमाल में मअदलुन्नहार है यअनी 22जून और 22 दिसम्बर के मतलअ के एैन वस्त में मअदलुन्नहार है।

यूही 22 जून और 22 दिसम्बर के मतलअ के जाये गुरुब(गुरुब की जगह) के बीच व बीच मअदलुन्नहार है।

इस को मअदलुन्नहार इस लिये कहा जाता है कि सूरज जब इस दाइरा के सीध में आता है तो तमाम मकामात में दिन रात तकरीबन बराबर होते हैं जो दाइरा-ए-मअदलुन्नहार को इस तरह कतअ करता है कि दोनों के कुतबों में 23 दर्जा 27 दकीका फरसल रहता है उसी दाइरा-ए-अजीमा को दाइरातुलबुरुज या मन्तिकतुलबुरुज कहते हैं। इस दाइरा से सितारों की हरकात की मिकदारें तूल और मील शम्स मअलूम होता है।

यहाँ से मअ्लूम हुआ कि जब तक यह दाइरा-ए-अजीमा, दाइरा-ए-मअ्दुलुन्नहार को इस तौर पर काटता हुआ चलेगा कि मुनदरजा बाला फासला दोनों में काइम रहे और जब तक हरकते शम्स मअ्मूल के मुताबिक रहे।

“तफसीरे कबीर” में इमाम राजी अलैहिर्रहमा न “وَإِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ” की तफसीर में एक कौल यह नकल किया :

“**الْقِيَت وَرَمِيت عَنِ الْفَلَكِ**” यअनी जब सूरज फलक से नीचे डाल दिया जाये। (तफसीरे कबीर जि. 31 स. 66)

इस से इस कौल की ताईद और हदीस की तस्दीक मुस्तफाद होती है और इस सूरत में खुद आयते करीमा से मजमूने हदीस की तस्दीक साबित है और हदीस का मजमून मफहूमे आयत का बयान है कि सूरज जब अपने मदार से नीचे जो जमीन से करोड़ों मील ऊपर है अपने मदार से नीचे फेंका जायेगा तो ला मुहाला उस का दाइरा छोटा होता जायेगा और नीचे आने के सबब उस की हरकत तेज हो जायेगी तो मुसाफत भी कम और हरकते शम्से भी तेज होगी।

लिहाजा बदाहतन जमाने की मिकदार घट जायेगी इजरत अबूहुरैरा से हदीस मरवी है कि जब कयामत करीब होगी जमाना करीब होजायेगा (थोड़ा रह जायेगा) तो साल महीना की तरह और महीना जुमआ की तरह और जुमआ की मुदत इतनी होगी जितनी देर में खजूर की टहनी आग में जल जाये।

हदीसे पाक के अल्फाज यह हैं।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ إِذَا اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ تَقَارَبَ الزَّمَانُ فَتَكُونُ السَّنَةُ كَالشَّهْرِ وَالشَّهْرُ كَالْجُمُعَةِ وَالْجُمُعَةُ كَالْحَتِّاقِ السَّعْفَةِ فِي النَّارِ (نز जल्द १२ स २२)

साल और महीना वगैरा की मिकदार काइम रहेगी और यह फासिला जितना कम होता जायेगा उस के नतीजा में दाइरातुलबुरुज मअ्दुलुन्नहार से बतदरीज नज्दीक होता जायेगा और जमाना की मिकदार घटती जायेगी।

यहाँ से ज़ाहिर हुआ कि यह जो फरमाया गया कि महीने घट

जायेंगे अपने जाहिरी मअना पर है और कोई वजह हकीकी मअना से मानेअ(रोकती)नहीं तो वही हकीकतन मुराद है और हदीस जो आखिर में जिक्र की गई वह फिकरा-ए-हदीस से फिकरा-ए-मजकूरा की तफसीर है. **وَاللّٰهُ الْحَمْدُ**

यिजजुमला गज़नूने हदीस अपने जाहिर पर है और जाहिरी मअना मुराद लेने में न कोई इरितहाला(मजबूरी) है न कोई और दलील शरई एतौ है जो जाहिरी मअना से उदूल की मुक्तजी है (न कोई दलील शरई ऐसी है जो जाहिरी मअना मानन से रोकती हो) है बल्कि मुख्तारी शरीफ में उस मजगून को मुअय्यद हदीस मौजूद है जिस में "तकारियुज्जमान" फरमाया गया जिस से जमाने का बाहम करीब होना जाहिरन मुस्ताफाद(साबित) है " मुस्लिम शरीफ " की हदीस में है कि : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने दज्जाल का जिक्र फरमाया सहाबा ने अर्ज किया जमीन में दज्जाल की मुदत इकामत (ठहरने की मुदत) कितनी होगी? फरमाया चालीस दिन। एक दिन एक साल जैसा होगा और एक दिन एक महीना जैसा होगा और एक दिन जुमआ जैसा ~~यही एक दिन होगा~~ बराबर होगा और दज्जाल को बाकी अय्याम तुम्हारे दिनों जैसे होंगे तो अर्ज की गई या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तो वह दिन जो एक साल बराबर होगा तो क्या हमें उस में एक दिन की नमाज पढ़ना काफी होगा कहा नहीं उस के लिय अन्दाजा रखो।

अल्लामा शलबी इमाम कमालुद्दीन हुम्माम से हाशिया तबीयीनुलहकाइक से नाकिल उन्होंने ने इस हदीस को नक्ल करने के बअद फरमाया बे शक सरकार अलैहिस्सलाम ने उन हदीस में अपने इरशाद में अस की तीन सौ नमाजें बाजिब फरमाई इस से पहले कि साया एक मिस्ल या दो मिस्ल हो और उसी पर बाकी नमाजों को कयास करो। (तबीयीनुलहकाइक जि.1 स 81)

यहाँ से जाहिर हुआ तकारिये जमान और नुक्साने मिक्दारे साल व अय्याम अपने जाहिर पर है जिस में किरसी तावील की गुन्जाइश नहीं बल्कि हदीसे मुस्लिम साफ साफ दाफेअ तावील है यहाँ

से यह भी जाहिर हुआ कि सूरज का नीले शम्स जो मजकूर हुआ उस का उसी भिकदार मोअजाद पर काइम रहना जरूरी नहीं बल्कि उस में बतदरीज कमी होती रहेगी तंजी से गौसम की तबदीली जिस का मुशाहिदा है उस की रौशनी दलील है नीज कुआन शरीफ में फरमाया :

”والشمس تجرى لمستقر لها ذلك تقدير العزيز العليم“

यअनी "और सूरज चलता है अपने ठहराओ के लिये यह हुक्म है जबर दस्त इल्म वाले का" (तर्जमा कज्जुल ईमान)

आयते करीमा से जाहिर कि सूरज मुसल्लस अपने मुस्तकर की तरफ चल रहा है और जब सूरज अपने मुस्तकर की तरफ रवों दवाँ है तो जरूर उस की उस के लिये एक मसाफत मुकद्दर है जिसे उस को कयामत तक तै करना है लिहाजा किसी एक मुस्तकर पर नहीं ठहरता बल्कि जब किसी मुस्तकर पर पहुँचता है बहुक्मे इलाही वहाँ से दूसरे मुस्तकर की तरफ रवाँ हो जाता है यही सिलसिला उस की इन्तिहा—ए—सैर तक यअनी कयामत तक जारी रहेगा।

तफ्सीरे कबीर में है : **JANNATI KAUN?**

وَعَلَىٰ هَذَا فَمَعْنَاهُ تَجْرِي الشَّمْسُ وَقْتَ اسْتِقْرَارِهَا أَيْ
كَلِمَا اسْتَقَرَّتْ زَمَانًا أَمَرَتْ بِالْجَرَى فَجَرَتْ وَيَحْمِيلُ أَنْ
تَكُونَ بِمَعْنَى أَيْ إِلَى مَسْتَقَرِّهَا وَيُؤَيِّدُ هَذَا قِرَاءَةُ مَنْ
قَرَأَ (وَالشَّمْسُ تَجْرِي إِلَى مَسْتَقَرِّهَا) وَعَلَى هَذَا فَفِي
ذَلِكَ الْمَسْتَقَرُّ وَجْهٌ (الْأَوَّلُ) يَوْمُ الْقِيَامَةِ وَعِنْدَهُ تَسْتَقَرُّو
لَا يَبْقَى لَهَا حَرَكَةٌ.

यअनी "और उस तफदीर पर जब कि लाम इफादा वक़्त के लिये हो तो आयत का मअना यह है कि सूरज अपने जमान—ए—इस्तिकरार में चलता है यअनी जब किसी जमाना में किसी मुस्तकर पर पहुँचता है उस को वहाँ से चलने का हुक्म होता है तो चल पड़ता है और यह इहतिमाल है कि लाम बमअना इला हुवा यअनी सूरज अपने मुस्तकर की तरफ चल रहा है और उस रौशनी की मुअय्यद उस की किरात है

”وَالشَّمْسُ تَجْرِي إِلَىٰ مَسْتَقَرٍّ لَّهَا“ जिस ने यूँ पढ़ा और उस तौजीह पर उस मुस्तकर मजकूर में चन्द तौजीहात हैं पहली यह कि वह मुस्तकर यौमे क़यामत है और उस दिन सूरज ठहर जायेगा और उस में हरकत न रहेगी। (71/26)

उसी में है :

”قوله (ذلك) يحتمل ان يكون اشارة الى جري الشمس أي ذلك الجري تقدير الله (الى ان قال) ان الشمس في ستة اشهر كل يوم تمر على مسامطة شيء لم تمر من امسها على تلك المسامطة

यअनी “और अल्लाह का फ़रमान “जालिक्” में इहतिमाल है कि उस में इशारा हो सूरज के चलने की तरफ़ यअनी सूरज का यह चलना अल्लाह की तक्दीर है यहाँ तक कि उन्होंने कहा कि सूरज छः महीनों में हर दिन किसी शय की सिम्त से गुज़रता है कि गुज़रता कल उस सिम्त से न गुज़रा था। (72/26)

इस से ज़ाहिर कि सूरज मुसलसल चल रहा है और एक मुसाफ़त तै कर रहा है और उसे किसी मुस्तकर पर क़रार नहीं। अअ्ला हज़रत ने अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद की एक क़िरात नक़ल की कि उन्होंने ने यूँ पढ़ा “لَا مُسْتَقَرَّ لَهَا” यह तफ़ावुते मील और बतदरीज इरतिफ़ाअ व इन्ख़िफ़ाज़ और बोअद व कुर्ब में तफ़ावुत का मुक़तज़ी है और आख़िर कार क़यामत के नज़दीक सूरज के ज़मीन से ज़्यादा करीब होन पर दलालत करता है जो तफ़ारिबे ज़मान और यौम व साल में नुक़सान का मुक़तज़ी है जिस का इफ़ादा अहादीस ने फ़रमाया (क़यामत के नज़दीक सूरज के ज़मीन से ज़्यादा करीब होने की वजह से ज़माना करीब हो जायेगा और दिनों व साल कम हो जायेंगे यअनी छोटे हो जायेंगे) وَفِي الْآيَةِ وَجْهٌ آخَرُ الْقُرْآنُ مُحْتَجٌ بِهِ عَلَىٰ جَمِيعٍ وَجْهٌ كَمَا أَفَادَهُ الْإِمَامُ سَيِّدِي أَمَجْدُ مَوْلَانَا الشَّيْخُ أَحْمَدُ رِضَا قُدْسُ سِرِّهِ تَقْلًا عَنِ الزَّرْقَانِي عَلَى الْمَوَاهِبِ.

जब औरतें तुर्की घोड़ों पर बैठें

यअनी फखर व मुबाहात के तौर पर मर्दों से मुशाबहत इख्तियार करें। चुनाँचे मुत्तसिलन फरमाया गया :

“ और औरतें मर्दों से मुशाबहत इख्तियार करें ”

तो यह करीना—ए—साबिका है मजीद बरआँ उस में इफादा—ए—उमूम है यअनी खास शह सवारी ही नहीं बल्कि और भी मरदाना अतवार अपनायेंगी और मुस्तहक जन्ब (गुनाह की मुस्तहक) होगी⁽¹⁾ बिला जरूरते सहीहा औरत को घोड़े पर चढ़ना मनअ है कि यह भी एक किस्म का मरदाना काम है हदीस में उस पर लअनत आई इब्ने हब्बान अपनी सहीह में अब्दुल्लाह इब्ने उमर रदियल्लाहु तआला अन्हुमा से रावी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

“يكون في آخر امتي نساء يركبون على مرج كاشباه الرجال (الحديث) وفي آخره العنوهن فانهن ملعونات.

यअनी “मेरी उम्मत के आखिर में कुछ ऐसी औरतें होंगी जो

1. आज हम देख रहे हैं कि लड़कियाँ भी वे झिझक मर्दों की तरह बाल रखती हैं जिन्स पैन्ट और टी शर्ट जैसे तंग व चुस्त कपड़े पहन रही हैं जिस से उन के बदन के सारे नशीब व फराज बाजोह हो जाते हैं यअनी कपड़ा पहनने के बावजूद भी वह नंगी ही होती हैं और यह दअवते गुनाह देने के मुतरादिफ है।

चुनाँचे हदीस पाक में है : عن ابن عمر قال لا تقوم الساعة حتى : यअनी हजरत अब्दुल्ला इब्ने उमर रदियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि कयामत उस वक़्त तक न काइम होगी जब तक कि लोग जानवरों की तरह रास्तों में जुपती न करने लगें।

(कन्जुल उम्माल जि. 14 स. 246)

आज जायजा सड़कों और मेलों में एअलनिया ज़ना कारी की वारदातें होने लगी हैं, जिन की ख़बरें हम आये दिन अख़बारों में मुलाहिजा करते हैं। ज़ाहिर है कि जब इस कदर बे हयाई व उरयानियत बढ़ जायेगी तो अन्जाम यही होगा। (फारूकी गुफिरलहु)

मर्दों की तरह जानवरों पर सवार होंगी (अलहदीस) और उस के आखिर में यह अल्फाज आये : उन औरतों पर लअनत भेजो क्योंकि वह मलऊन हैं। (मोरिदुज्जमान स. 351)

सुनन अबी दाऊद में इब्ने अबी मलीका से मरवी है:

”قيل لعائشة ان امرأة تلبس النعل فقالت لعن رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم الرجل من النساء.

यअनी “उम्मुलमोमिनीन हजरत आइशा सिद्दीका रदियल्लाहु तआला अनहा से कहा गया : एक औरत मर्दाना जूता पहनती है फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन औरतों पर लअनत फरमाई जो मरदानी वजअ इख्तियार करें”(210/2)

जनाने अरब(अरब की औरतें)जो ओढ़नी ओढ़तीं, हिफाजत के लिये सर पर पेच दे लेतीं उस पर यह इरशाद हुआ कि एक पेच दें दो न दें कि अमामा वाले मर्दों से मुशाबहत न होजाये क्योंकि औरतों को मर्दों से और मर्दों को औरतों से “तशब्होह” हराम है।

इमाम अहमद व अबूदाऊद व हाकिम ने बसनद हसन उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की:

”ان النبي صلى الله تعالى عليه وسلم دخل عليها و

تختمر فقال لية لا ليتين. यअनी “नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सय्यिदा उम्मे सलमा रदियल्लाहु तआला अन्हा के हों तशरीफ ले गये तो देखा कि वह ओढ़नी ओढ़ रही हैं तो इरशाद फरमाया सर पर सिर्फ एक पेच दो, दो न हों (सुनन अबू दाऊद 212/12)

अब्दुल्ला इब्ने उमर रदियल्लाहु तआला अन्हा ने उम्मे सईद बिनते उम्मे जमील को कमान लगाये मर्दानी चाल चलते देखा तो इरशाद फरमाया :

”سمعت رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم يقول

ليس منامن تشبه بالرجال من النساء ولا من تشبه
بالنساء من الرجال رواه احمد والطبراني.

यअनी " मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम
को इरशाद फरमाते सुना कि : वह औरत हम में से नहीं जो मर्दों से
मुशाबहत इख्तियार करे और वह मर्द भी जो औरतों से मुशाबहत
इख्तियार करे, उसे इमाम अहमद व इमाम तबरांनी ने रिवायत किया"
(मुसनदे अहमद इब्ने हमबल)

औरत को अपने सर के बाल कतरना हराम है और कतरे तो
मलऊना कि यह मर्दों से मुशाबहत है और औरतों का मर्दों से
तशब्बोह हराम दुर्रे मुख्तार में है :

قطعت شعر رأسها اثمت ولعنت والمعنى المؤثرة التشبه بالرجال.
यअनी " किसी औरत ने सर के बाल कतर डाले तो गुनहगार हुई
नीज़ उस पर अल्लाह की लअनत हुई उस में जो इल्लत मुअरिसरा है
वह मर्दों से "तशब्बोह" है"। (250/2)

जब औरतें मर्दों से और मर्द औरतों से मुशाबहत करें
यह भी कयामत की निशानियों में से है और यह निशानी
वाकए हो चुकी ज़माना—ए—हाल में ब—कसरत उस का मुशाहिदा हो
रहा है और यह शरअन ममनूअ है।

मुसनद इमाम अहमद जि. 1 स. 339/पर है :

"لعن الله المتشبهين من الرجال بالنساء والمتشبهات
من النساء بالرجال" यअनी "अल्लाह की लअनत है उन लोगों पर
जो औरतों की वज़अ इख्तियार करें और उन औरतों पर जो मर्दों की
वज़अ इख्तियार करें"

आज औरतों और मर्दों ने बहुत से तरीके एक दूसरे से
मुशाबहत के इख्तियार कर लिये हैं। उन्हीं में से एक मरव्वजा चैन की
घड़ी है जिसे आम तौर पर मर्दों में पहनने का रिवाज हो गया है।

यहाँ तक कि बहुत सारे इमाम, मौलवी, और मुफ्ती भी बे दरेग उस को पहने हुए नजर आते हैं। यह क़तअन जीनते ममनूआ और तहल्ली नाजाइज़ है उस का जवाज अअ़ला हज़रत फ़ाज़िल बरेलवी कुद्दिस सिर्रुहु के कलिमात से बताया जा रहा है हालाँकि उन के कलिमात से हरगिज़ उस का जवाज़ साबित नहीं होता।

अव्वलनः—तो यह चैन जो हाथ में पहनी जाती है उन (अअ़ला हज़रत)के ज़माने में थी ही नहीं।

सानियनः—जिस चैन पर उस को क़यास किया जा रहा है उस के तअल्लुक से अअ़ला हज़रत अज़ीमुलबरक़त फ़ाज़िले बरेलवी कुद्दिस सिर्रुहु मुतअदिद जगह जो कुछ फ़रमाते हैं उस से उस की साफ़ हुरमत मुस्तफ़ाद होती है।

अअ़ला हज़रत से यह सवाल हुआ कि :

फी ज़मानिना कुर्तो और सदरियों में चाँदी के बोताम मअ़ जन्जीर लगाते हैं जाइज़ हैं या नहीं ? इला आखिरिही”

उस के जवाब में अअ़ला हज़रत फ़रमाते हैं :

“चाँदी के सिर्फ़ बोताम टाँकने में हरज नहीं कि कुतुबे फ़िक्ह में सोने की घुन्डीयों की इजाज़त मुसर्रह मगर यह चाँदी की ज़नजीरें कि बोतामों के साथ लगाई जाती हैं। सख़्त महल्ले नज़र हैं कलिमात अइम्मा से जब तक उन के जवाज़ की दलील वाजेह कि आफ़ताब रौशन की तरह ज़ाहिर व जली हो, न मिले हुक्मे जवाज़ देना महज़ जुरअ़्त है कि चाँदी सोने के इस्तिअ़माल में अर्रल हुरमत है। शैख़ मुहक्किक मौलाना अब्दुलहक़ मुहद्दिस देहलवी कुद्दिस सिर्रुहु “अशअ़तुल लमआत शरहे मिश्कात”में फ़रमाते हैं :अर्रल दर इस्तिअ़माले जहब व फ़िद्दा हुरमत अस्त” यअ़नी जब शरअ़ मुतहहर ने हुक्मे तहरीम(हराम होने का हुक्म) फ़रमा कर उन की इबाइते अर्रिलया को नरख़ कर दिया तो अब उन में अर्रल हुरमत होगई कि जब तक किसी

ख़ास चीज़ की रुख़सत शरअ से वाज़ेह व आशकार न हो, हर ग़िज़ इजाज़त न दी जायेगी बल्कि मुतलक़ तहरीम के तहत (हराम होने में) दाख़िल रहेगी।

ثانياً **هذا وجهه واقول!** जाहिर है कि उन ज़न्जीरों के उस तरह लगाने से तज़य्युन मक़सूद होता है बल्कि तज़य्युन ही मक़सूद होता है और ऐसे ही तज़य्युन को तहल्ली कहते हैं। उलमा तसरीह फ़रमाते हैं मर्द को सिवा अँगूठी पेटी और तलवार के सामाने मिस्ल पर तले वगैरा के चाँदी से तहल्ली किसी तरह जाइज़ नहीं। (फ़तावा रजबीया जि. 9 स. 34)

नीज़ उसी के स. 298/299 पर फ़रमाते हैं :

“ज़न्जीरों के लिये न ज़र (बटन) की तरह कोई नस फ़कीर ने पाया न जवाज़ पर कोई साफ़ दलील बल्कि वह ब—जाहिर मक़सूद बिनफ़िसहा हैं, न ज़र की तरह कपड़े की कोई गरज़ उन से मुतअल्लिक़, न इल्म की तरह सौब में मुस्तहलक़ के ताबेअे सौब ठहरें न उन से सिंगार और जीनत के सिवा कोई फ़ायदा मक़सूद और वह ज़ेवरे ज़नान (औरतों के ज़ेवर) से कमाल मुशाबिह हैं उन की हयअत (बनावट) व हालत बिल्कुल सहारों की सी है कि एक तरफ़ उन के कुन्डों में बालियाँ पिरोकर उन को दोनों जानिब से पेशानी के बालों पर ला कर काटा डाल कर मिला देते हैं वह भी इन ज़न्जीरों की तरह लड़ियाँ ही हैं बल्कि उन से अलावा तज़य्युन एक फ़ाइदा भी मक़सूद होता है कि बालियों का बोझ कानों पर न पड़े यह उन्हें उठा कर सहारा दिये रहें। इसी लिये उन को सहारे कहते हैं और इन ज़न्जीरों की लड़ियाँ सिवा जीनत के कोई फ़ायदा नहीं देती तो ब निस्बत सहारों के उन की लड़ियाँ झूमर की लड़ियों से ज़्यादा हैं। और सहारों की तरह यह भी दाख़िल मलबूस (पहनने में शामिल) हैं बल्कि उन का सिर्फ़ जीनत के लिये बिज़ात मक़सूद और कपड़े की अग़राज से महज़ बे तअल्लुक़ व नामुस्तहलक़ होना झूमर की तरह

उन के और भी ज्यादा लंबा मुस्तकिल का मुकतजी है (बटन के चैन की लकड़ियां इनपर पहनने की तरह हैं जो जीनत में शामिल हैं और बतौर जिनत पहनना मर्द के लिए जाइज नहीं) इला आखिरिही

वहाँ से जाहिर हुआ कि अज़ला हजरत अजीमुलबरकत कुदिस सिरुहु के जमाने में जो जेबी घड़ी की चैन राइज थी जिसे कुरते सदरी गंगरा में लगा कर घड़ी जेब में रखते थे, उन के नजदीक उस का भी वही हुक्म है जो जेवर का है तो यह चीज जो दरती घड़ी में लगाई जाती है बदरजा-ए-ऊला जेवर है और उस के पहनने से तहल्ली य जेबाइश मकरसूद होना जाहिर तर है।

लिहाजा उस की हुर्मत अज़हर और उस में औरतों से तशब्बोह बाहिर व रौशन (इस में औरतों से मुशाबहत बिल्कुल जाहिर और रौशन है) तर वहाँ पहनने से मुशाबहत होने की वजह से हुक्मे हुर्मत (हराम होने का हुक्म) दिया तो यहाँ पहनने में कोई शुबह ही नहीं तो यहाँ ग़ालिस हुर्मत है न कि शुबह हुर्मत (न कि हराम होने का शक)!

जिस के बारे में फरमाया :

"मुहरमात में शुबह निस्ले यकीन है तो उस में चीज की हुर्मत व निस्बत जगजीर के खूब आश्कार (जाहिर) है"

यहाँ से मुजव्वेजीन (जाइज करने वाले) के कयास की हालत जाहिर हो गई हमारी दानिस्त (इल्म) में अज़ला हजरत अजीमुलबरकत कुदिस सिरुहु के कलिमात में न तआरुज़ (टकराव) है, न उन के किसी फतवे से उस चीज या उस ज़न्जीर का जवाज़ निकलता है।

बिल्फर्ज अगर सूरते तआरुज़ (टकराव की शकल) हाँ भी तो ख़ूब उन तसरीहत की तरफ लाज़िम है कि खुद कवी और शुबह से साफ़ है और जिस कलिमा से उस का खिलाफ़ मुतवहहम (शक) हाँ, उस की तावील लाज़िम है और उस तरह ततबीक (जो बातें एक दूसरे के बज़ाहिर खिलाफ़ हो लेकिन उन में मुवाफिक़त बयान करना) देना

जरूरी है।

लिहाजा अगर "अल्तीबुलकजीज़" में अल्लामा शामी की उस बहस के पेशे नज़र कि यह वज़अे लुत्स(पहनने के लिए बनना) है या नहज तअलीके जन्जीर(जंजीर लटकाने के लिए), अअला हज़रत ने यह फरमादिया :

"एहतिराज़ औला है या उस से बचना चाहिये"

जो तावील इसी कलाम-ए-तवहहुम जवाज़(जिस जुमले से जाइज़ होने का वहन होना)) की जरूरी है ताकि दूसरे फतावा से तआरुज(टकराव)लाज़िम न आये वरनाऔंकात "औला" या उस के हम मअना लफज़ का इत्लाफ "वाज़िब" पर करते हैं। चुनौचे "अनाया" जि. अव्वल स. 242 पर है :

”وَكَذَلِكَ إِنْ صَلَّى عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْتَمْعُونَ وَيَنْصَتُونَ سَأَلَ أَبُو يَوْسُفَ أَبَا حَنِيفَةَ رَحِمَهُمَا اللَّهُ إِذَا ذَكَرَ الْإِمَامَ هَلْ يَذْكُرُونَ وَيُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَبُّ إِلَيَّ أَنْ يَسْتَمْعُوا وَيَنْصَتُوا أَوْ لَمْ يَقْلَ لَا يَذْكُرُونَ وَلَا يَصَلُّونَ فَقَدْ أَحْسَنَ فِي الْعِبَارَةِ وَاحْتِشَمَ مَنْ أَنْ يَقُولَ لَا يَذْكُرُونَ وَلَا يَصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَمَّا كَانَ الْإِسْتِمَاعُ وَالْإِنْصَاتُ أَحَبُّ لَنَا ذَكَرَ اللَّهُ وَالصَّلَاةُ عَلَى النَّبِيِّ عَلَيْهِ السَّلَامُ لَيْسَ بِفَرَضٍ وَاسْتِمَاعُ الْخُطْبَةِ فَرَضٌ.

यअनी " यँहीं अगर खतीब नबी अलैहिस्सलातु वरससलाम पर दुरुद पढ़े तो लोगों को सुनना और चुप रहना लाज़िम है इमाम अबू यूसुफ ने इमाम अअज़म से पूछा इमाम अगर ज़िक्र करे क्या मुक़तदी भी ज़िक्र करें और नबी अलैहिस्सलातु वरससलाम पर दुरुद भेजें ? इमामे अअज़म ने फरमाया मुझे यह पसन्द है कि वह लोग खुतबा सुनें और

खामोश रहें और इमामे अजूम ने यह न कहा कि जिक्र न करें और दुरुद न भेजें तो इस तरह तअबीर में हुसने उसलूब से काम लिया और यह कहने से बचे कि जिक्र न करें और दुरुद न भेजें और सुनना और खामोश रहना इस लिए पसन्दीदा ठहरा कि अल्लाह का जिक्र और नयी अलैहिरसलाम पर दुरुद भेजना फर्ज नहीं और खुतबा का सुनना फर्ज है।

नीज़ "जौहरा नय्यिरा" जि. 2 स. 260 पर है :

“وَيَنْبَغِي أَنْ يَكُونَ قَدْرُ فَضَّةِ الْخَاتَمِ مِثْقَالًا وَلَا يَزَادَ عَلَيْهِ وَ”
 “يَنْبَغِي أَنْ يَكُونَ قَدْرُ فَضَّةِ الْخَاتَمِ مِثْقَالًا وَلَا يَزَادَ عَلَيْهِ وَ”
 “अंगूठी की चाँदी की मिक्दार एक मिसकाल होना चाहिये और उस से ज्यादा करना मनअ है और एक कौल यह है कि चाँदी की मिक्दार पूरी एक मिसकाल न करे”।

इस जगह भी “يَجِبُ” (वाजिब)की जगह يَنْبَغِي (चाहिये)

फरमाया खुद “फतावा रजविया” में उस की नजीर यह इरशाद है अशरा मुहर्रम तीन रंगों के बाबत फरमाते हैं:

“मुसलमान को चाहिये अशरा मुबारका में तीन रंगों से बचे सब्ज, सुर्ख, सियाह, सब्ज की वजहें तो मअलूम हो गयी और सुर्ख आज कल नासिबी खबीस खुशी की नियत से पहनते हैं। सियाह में ऊदा, नीला, कासनी, सब्ज में काही, धानी परती, सुर्ख में गुलाबी, अनाबी नारांगी सब दाखिल हैं। गर्ज जिस पर उन में कोई रंग सादिक आये अगर सोग या खुशी की नीयत से पहने जब तो खुद ही हराम है वरना उन की मुशाबहत से बचना बेहतर “इला आखिरिही। (फतावा रजविया जि. 9 स. 301)

यहाँ बेहतर और हराम के तकाबुल से बजाहिर यह मअलूम होता है कि अगर सोग या खुशी की नियत न हो तो उन कपड़ों को पहनना जाइज बल्कि अच्छा बेहतर के मुकाबिल विह यअनी अच्छा है हालाँकि सियाके कलाम(बयान का अन्दाज़)से यह मअना किस कद

बेगाना हैं। यह अन्न किसी से पोशीदा नहीं तो कतअन यहाँ बेहतर मअना तफज्जुल पर नहीं ,न महज मुस्तहब के मअना में और यहाँ इबारत में लफज "चाहिये" भी महज मुस्तहब के मअना में नहीं कि मुकाबिल वाजिब करार पाये बल्कि मुराद यह है कि अगर यह नियत न भी हो जब भी उन की मुशाबहत से बचना औला व वाजिब है तो यहाँ भी लफज "चाहिये" और "बेहतर" "वाजिब" की जगह इस्तिअमाल हुआ है इस लिये पहले यह कहा :

"अशरा मुहर्रम के सब्ज रंगे हुये कपड़े भी नाजाइज हैं। यह भी सोग की गर्ज से हैं इला आखिरिही (फतावा रजविया जि. 9 स. 300)

शायद एक वजह उस जेबी घड़ी की जन्जीर के जवाज की मुम्किन है उस सूरत में जबकि वह चीज़ चाँदी व सोने के अलावा किसी और धातु की हो और उस से तहल्ली जेबाइश व नुमाइश मकसूद न हो बल्कि घड़ी की हिफाजत के लिये कपड़े में छुपा कर लगाई जाये।

JANNATI KAUN?

इस सूरत में अला हजरत कुदिस सिरुहु के कलिमात स अगर उस चीज़ के जवाज का ईहाम(वहम)होता है तो उस का महमूल यही सूरत है और उसी सूरत पर उन के कलिमात को महमूल करने से उन के फतावा में तआरुज का वहम मुन्दफअ(दूर) हो जाता है मगर यह सूरत जेबी घड़ी की चैन में नहीं तो उस पर कयास दुरुस्त नहीं कि दोनों सूरतें जुदागाना हैं।

जब गैरुल्लाह की कसम खाई जाये

अलामत कयामत में सरकार अलैहिरसलातु वस्सलाम ने यह भी बताया कि लोग गैरुल्लाह की कसम खाएंगे और गैरुल्लाह की कसम शरअन मगनूअ(अल्लाह के अलावा किसी की कसम खाना जाइज नहीं) है।

हदीस शरीफ में है :

“**من حلف بغير الله فقد أشرك.**” यअनी “जो गैरुल्लाह की कसम खाये वह मुश्रिक है” (फैजुलकदीर जि. 6 स. 120)

यअनी इकीकतन मुश्रिक है अगर गैरुल्लाह की वह तअजीम मुराद ले जो अल्लाह के लिये खास है उसी कबील(उसी तरह) से युक्तों की कसम खाना है।

हजरत अबूहुरैरा से हदीस है : जो कसम खाये तो अपनी कसम ने यूँ कहे “लात व उजजा की कसम” ताँ वह कलिमा-ए-ताहीद पढ़े और जो अपने होश से कहे आओ तुम से जुआ खेलूँ तो वह सदका दे।

हदीस के इस फिकरे से मअलूम हुआ कि गुनाह का इरादा जब दिल में पुरखा हो जाये तो यह भी गुनाह है और उस को जाहिर करना दूसरा गुनाह सदका देने का हुक्म उस गुनाह के कफ़ारे के लिये बतौर इस्तिहाबाब है।

हदीस में है :

“**الصدقة تطفي غضب الرب كما يطفى الماء النار.**” यअनी सदका अल्लाह के ग़ज़ब की आतिश को ऐसे बुझा देता है जैसे पानी आग को। (तबरानी जि. 19 स. 145)

इस हदीस में “**لا اله الا الله**” पढ़ने का जो हुक्म दिया इस में दो एहितमाल है एक यह कि नो मुस्लिम से आदते साबिका (पुरानी आदत)की वजह से सहवन(भूलकर)सबक़ते लिसानी(बोलने की तेज़ी) से

बुतों की कसम सादिर हो तो उस के लिये मुस्तहसन है कि
 “**لا اله الا الله محمد رسول الله**” उन दुरे कलिमात के
 कफकारे के तौर पर पढ़े और दूसरा एहितमाल यह है कि लात व
 उज्जा और बुतों की तअजीम मकसूद हो।

इस सूरत में वह शख्स मुस्तद हो जायेगा और कलिमा—ए—
 खिलाफे इस्लाम से तबरी(दूरी जाहिर करने) के साथ तजदीद ईमान
 लाजिम होगी और कलिमा तौहीद पढ़ना जरूरी होगा और अगर
 गैरुल्लाह की कसम में वह तअजीम मुराद नहीं जो अल्लाह के लिये
 खास है तो यह इकीकतन शिर्क नहीं लेकिन सूरतन अहले शिर्क के
 फेअल से मुशाबा होने की सूरत की वजह से उस पर भी शिर्क का
 इतलाफ आया और जजर व तशदीद(सख्ती और अदब सिखाने)के तौर
 पर उस के मुस्तकिब को भी मुशिरक कहा गया।

इस सूरत में मुराद यह है कि उस शख्स ने मुशिरकों जैसा
 फेअल किया इस कबील से बाप दादा, बेटे वगैरा के नसब पर तफाखुर
 (गर्व करने)के तौर पर कसम खाना है जैसा कि जमाना—ए—जाहिलियत
 में रिवाज था इदीस में उस से भी मुमानअत आई।

अकूलु(ताजुशशरिआ फरमाते हैं)हमारे तर्ज बयान से साफ मअलूम हुआ
 कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का एक एअराबी के
 मुतअल्लिक **“افلح وابيه ان صدق”** फरमाना यअनी “यह फ़लाह
 को पहुँचा अपने बाप की कसम अगर सच्चा है”मुमानअत के तहत
 दाखिल नहीं। बल्कि बयाने जवाज के लिये है।

गोया सर कार अलैहिरसलातु वरसलाम अपने फेअल से यह
 बता रहे हैं कि बाप की कसम खाना ना जाइज नहीं जब कि रस्मे
 जाहिलियत के तौर पर तफाखुर के लिये न हो,न उस से तअजीम
 मुफरित(हद से ज्यादा इज्जत देना) कि ममनूअ है, मकसूद हो और
 एक एहितमाल यह है कि ऐसी जगह ताकीदे कलाम और तकवीयते

बयान(बयान में जोर पैदा करना) मकसूद होती है तो उस सूरत में कसम शिर्क नहीं।

तम्बीह: गैरुल्लाह से मुराद वह तमाम चीजें हैं जिन्हें शरअन अल्लाह व रसूल जल्ल व अला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से कोई अलाका(तअल्लुक) नहीं न शरअन उन की कोई हुमत है, न उन की तअजीम का हुक्म नबी व रसूल कअ्बा व मलाइका इस मअना कर गैरुल्लाह में दाखिल नहीं(अगर्चे बाबे हलफ में यह भी गैरुल्लाह हैं मगर यह मुन्दरजा बाला के लिहाज से गैरुल्लाह नहीं)कि शरअन उन की तअजीम का हुक्म है।

अजौं जा कि अल्लाह ने उन की तअजीम का हुक्म दिया ता उन की तअजीम अल्लाह ही की तअजीम है उन की कसम खाना हराम नहीं मगर उलमा ने व मुकतजा-ए-इह्तियात (एह्तियात के तकाजे के तौर पर)इस तरह की कसम खाने को मकरुह कहा बल्कि उस से मुमानअत खुद हदीस में आई। कसमे शरई जिस का कफ़ारा लाजिम है, वह अल्लाह की वह कसम है जो अल्लाह की जात से या उस की सिफ़ात से मुतआरिफ़ तौर पर खाई जाये।

गैरुल्लाह की कसम, कसमे शरई नहीं। उलमा फ़रमाते हैं : अगर गैरुल्लाह की कसम को कसमे शरई जाने और उस का पूरा करना लाजिम समझे इस सूरत में आदमी काफ़िर हो जायेगा।

इमाम राजी ने फ़रमाया :

"मेरी जान की कसम⁽¹⁾ तेरी जान की कसम, कहने वाले पर मुझे

1. आज कल लोग छोटी छोटी बातों पर तेरी कसम, तेरी जान की कसम, जैसी कसम खाने लगते हैं हालाँकि ऐसी कसम खाने से उन्हें कोई फायदा नहीं पहुँचता बल्कि हजारत इमाम राजी के मुताबिक ऐसी कसम 'कुफ़' से ज्यादा करीब है बअज लोग बात बात पर "अगर मैं ऐसा न करूँ या ऐसा कहूँ तो ऐसा हो जाऊँ मसलन हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत से महरुम हो जाऊँ या मेरा बेटा मर जाये या मैं कोढ़ी हो जाऊँ " कह डालते हैं ऐसे लोग नजकूरा बयान से शक़ हासिल करें। फारुकी मुफिरलहु

कुफ़ का अन्देश है और लोग आम तौर पर यह नादानी में कहते हैं अगर ऐसा न होता तो मैं कहता यह शिर्क है।

इमाम राजी के इस कौल से यह जाहिर होता है कि गैरुल्लाह की कसम को कसमे शरई जानने में उलमा के दो कौल हैं।

एक में आदमी मुत्तलकन काफिर हो जायेगा और दूसरा यह कि उस में अन्देश-ए-कुफ़ है यह दसूरा कौल मोहतातीन मुत्तकलिलमीन की रविश पर है और उन का मजहबे मुख्तार व मोअत्तमद है जिस की तफसील आगे आरही है।

अकूलो:—(ताजुशरीआ फरमाते हैं)यह इस सूरत में है कि कहने वाला उसे कसमे शरई समझे और उस का पूरा करना ज़रूरी जाने और कसम पूरी न होने की सूरत में कपफारा देना ज़रूरी कयास करे। जैसे बअज़ जाहिल अपने बच्चे की कसम खाते हैं और उस का पूरा करना ज़रूरी समझते हैं और न करने की सूरत में कपफारा लाजिम ख्याल करते हैं।

JANNATI KAUN?

अगर यह सूरत न हो यअनी काइल उसे कसमे शरई न जाने न तअज़ीमे मुफरित(हृद से ज्यादा तअज़ीम करने) का कस्द करे तो उस पर यह महजूर(हुक्म)लाजिम नहीं आता **کمالایغفی** .

और इस हदीस में गैरुल्लाह की कसम खाने वाले को जो मुशरिक फरमाया गया उस से उस शख्स का भी हुक्म जाहिर जो यूँ कसम खाये 'अगर मैं यह काम करूँ' **(والعیاذ بالله تعالیٰ)** तो यहूदी या नसरानी या मिल्लते इस्लाम से बरी व बेजार हो जाऊँ 'ऐसी कसम खाना सख्त हराम बदकाम कुफ़ अन्जाम है।

बअज़ उलमा ने इस पर मुत्तलकन काइल को काफिर कहा मगर सहीह यह है इस मसअला में वही तफसील है जो **”من حلف”** मगर सहीह यह है इस मसअला में वही तफसील है जो **”بغیر الله فقد اشرك”** यअनी जो गैरुल्लाह की कसम खाये वह मुशरिक है ”में बयान हुई इस तफसील की तरफ खुद दूसरी हदीसों में

इशारा है इरशाद हुआ:

“**من حلف على ملة غير الاسلام كاذباً فهو كما قال**”

यअनी जो मजहबे इस्लाम के अलावा किसी और मजहब की कसम खाये दराँ हालि(इस हाल में) कि वह इस कसम में झूटा हो तो वह वैसा ही है जैसा उस ने कहा। (गिरकात शरह मिश्कात जि. 6 स. 581)

हजरत शैख अब्दुल हक मुहम्मिद देहलवी लिखते हैं

करो कि सौगन्द खुर्द वर दीन कि जजा-ए-इस्लाम अस्त-चुनोंकें गोयद अगर ई कार कुनम यहूदी बाशम या नसरानी शवम या बेजारम अज दीने इस्लाम या अज पैगम्बर या अज कुर्आन(काजिबन)दर हाल कि ब दरोग खूरन्दा अस्त ई सौ गन्द रा चुनोंकि बकुनद ई कार रा जंरा कि ई सौगन्द बरा-ए-मनअ फैअल अस्त कि नकुनिन्दा पस सिदके वे बअँअस्त कि नकुनद अगर बकुनद काजिब बाशद **(فهو كما قال)** पस आँ के हमचुनों अस्त कि गुप्त यअनी यहूदी व नसरानी **JAHIL** इस्लाम जाहिर हदीस आंस्त कि काइल ई हदीस काफिर मीगरदद बमुजरद हलफ या बअद अज हिन्स अज जिहतै इसकाते हुमतै इस्लाम **“خ”** यअनी अगर कोई दीने इस्लाम के अलावा किसी दीन की कसम खाये मसलन यूँ कहे कि अगर वह यह काम करे तो यहूदी, नसरानी या दीने इस्लाम से बेजार या पैगम्बर या कुर्आन से बरी हो जाये और हाल यह हो कि वह झूटी कसम खाये यअनी वह काम कर बैठे इस लिये कि कसम खाना इस फैअल से बाज रहने के लिये है तो कसम का सच्चा होना यह है कि वह काम न करे जिस के न करने की कसम खाई थी अगर वह काम करेगा तो झूटा ठहरेगा हदीस में उस शख्स के मुतअल्लिक फरमाया कि वह वैसा ही है जैसा उस ने कहा यअनी यहूदी या नसरानी या दीने इस्लाम से बरी इस हदीस का जाहिर यह है कि ऐसी कसम खाने वाला कसम से काफिर हो जायेगा इस लिये कि उस

जिहत से कि उस ने हुमत से इस्लाम को साकित (इस्लाम की अजमत खत्म किया) किया और कुफ़ पर राजी हुआ।

(अशअतुललमआत शरहे मिशकात जि. सोम स. 211)

बअज़ उलमा ने नज़रे बर जाहिरे इदीस (इदीस के जाहिर को देखते हुए) ऐसी कसम खाने वाले को मुतलकन काफिर कहा और बअज़ उलमा ने फरमाया कि मुराद उस कसम से यह है कि वह शख्स अपने नफ़स को तहदीद और उस के वईद में मुबालगा कर रहा है ताकि उस काम से अपने आप को बअज़ रखे तो मकसूद कसम से बशिदते ज़जे नफ़स व तहदीद है। लिहाज़ा हमारे नज़दीक वह जब तक कसम न तोड़े महज़ उस कौल से काफिर न ठहरेगा। इसी तरह अगर फेअले माज़ी (गुज़रे हुए काम) पर दीने इस्लाम से बराअत को मुअल्लक किया तो मोहतादीन के नज़दीक काफिर न रहेगा और बअज़ मशाइख के नज़दीक फेअले माज़ी पर मुअल्लक करने की सूरत में काफिर हो जायेगा।

मगर सहीह यही है कि उस सूरत में भी काफ़िरे मुतलक न होगा इस लिये कि काफिर एअ्तिकादे कुफ़ से होता है और यहाँ जाहिर यह कि उस की मुराद कसम से ज़जे नफ़स और तहदीद है यअ्नी जब कि किसी फेअले मुस्तक़बिल पर उस हुक्म को मुअल्लक करे या बराअत को मुअक्कद तौर पर यकीन दिलाना है यह उस सूरत में है कि फेअल माज़ी पर मुअल्लक करे गोया वह बताना चाहता है कि यह काम उस के नज़दीक ऐसा ही मकरूह व ना पसन्द है जैसा कि उस का यहूदी या नसरानी या इस्लाम से बरी होना। इस लिये तहदीदे नफ़स के लिये ऐसी चीज़ पर मुअल्लक किया जो इस के नज़दीक मकरूह व महज़ूर है।

अकूलो:—(ताजुशरीआ फरमाते हैं) हज़रत शैख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी ने इस बाब में जो दूसरा कौल जिक किया वह

मोहतातीन(एहतियात्) का है जो मुतकल्लिमीन की रविश पर है और उन की रविश यह है कि वह महज़ ज़ाहिर पर हुक्मे कुफ़ नहीं लगाते और कलाम में अदना एहतिमाल मानेअे तकफ़ीर(कुफ़ के ख़िलाफ़ ज़रा सा शक) हो उस का लिहाज़ करते हैं और काइल को जब तक उस की मुराद ज़ाहिर न हो जाये काफ़िर कहने से गुरेज़ करते हैं और यह एहतिमाल जो उन उलमा को ऐसी कसम खाने वाले पर हुक्मे कुफ़ लगाने से बाज़ रहने का मुक़तज़ी (चाहना)हुआ वह खुद हदीस से ज़ाहिर है कि फ़रमाया:

“अगर वह उस कसम में झूटा हो तो वैसा ही है जैसा उस ने कहा”

जिस का साफ़ मतलब यह है कि अगर वह उस कसम में सच्चा है और उसी मअ्ना—ए—कुफ़री का इबतिदाअन इरादा न किया हो (यअ्नी यहूदी या नस्रानी होने पर अब उस से राज़ी होना)तो ऐसा नहीं जैसा कहा और उस एहतिमाल की तसरीह(सराहत) दूसरी हदीस में इरशाद हुई जो हज़रत बुरीदा से मरवी है कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया : “जो यह कहे कि वह इस्लाम से बरी है(अगर यह काम करे)तो वह ऐसा ही है जैसा उस ने कहा और अगर वह उस कसम में सच्चा है तो इस्लाम में गुनाह से सलामती के साथ न रहेगा।

इमाम काज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने फ़रमाया कि इस हदीस का ज़ाहिर यह है कि उस कसम से उस का इस्लाम जाइल हो जायेगा और वह वैसा ही हो जायेगा जैसा उस ने कहा और यह भी एहतिमाल है कि वह उस के काफ़िर होने को कसम टूटने पर मुअल्लक़ करे। उस की दलील वह हदीस है जो हज़रत बुरीदा ने रिवायत की कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया:

“من قال انى برئ من الاسلام فان كان كاذباً فهو كما قال”

यअ्नी “ जिस किसी ने कहा मैं इस्लाम से बरी हूँ और अपने कौल में

झूटा हों तो वैसा ही है जैसा उस ने कहा" (मिशकात शरीफ स. 296.297)

शायद इस से काइल की मुराद(कहने वाले का मकसद) नफ़स की तहदीद(सख्त अज़ाब) और खुद को बर्हदे शदीद है न यह कि यह हुक्म लगाना कि वह अभी से यहूदी हो गया या इस्लाम से बरी हो गया तो गोया वह यूँ कह रहा है कि वह क़सम टूटने की सूरत में उसी उक़ूबत(सज़ा)का सज़ा वार है जिस का यहूदी मुस्तहक़ है और उस की नज़ीर हुजूर का यह कौल है :

”من ترك الصلاة متعمدا فقد كفر.” यअनी “जो जान बूझ कर नमाज़ छोड़े वह काफ़िर हो जाये” यअनी वह काफ़िर की उक़ूबत(सज़ा)का सज़ा वार है” (जामिउस्सगीर मअ फ़ैजुलकदीर जि. 6 / 102)

हज़रत इमाम काज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस दहेलवी की तरह यहाँ दो कौल ज़िक्र किये मगर सराहतन किसी कौल की सहेत का इफ़ादा न फ़रमाया अल्बत्ता दूसरे एहतिमाल की तौज़ीह व तअलील(वज़ाहत व वजह)इरशाद फ़रमाई जिस से साफ़ जाहिर है कि उन के नज़दीक भी यही मुख़्तार है कि काइल मुतलकन काफ़िर न ठहरेगा बल्कि क़सम टूटने की सूरत में रज़ा बिलकुफ़ के तयक्कुन(कुफ़ पर राज़ी रहने के यकीन) की वजह से काफ़िर होगा और यही हदीस का जाहिर मफ़ाद(मक़सद) है कि उस के इस्लाम से बरी होने का काज़िब(झूटा)होने पर मुअल्लक़ फ़रमाया तो वह इस बाब में न सिर्फ़ इरशादे उलमा से बल्कि खुद हदीस से मअलूम हुआ कि अगर मुस्लिम के कलाम में अगर मुतअद्दिद एहतिमालात हों जो उस के कुफ़ के मुक़तज़ी(चाहते)हों और एक वजह से उस के इस्लाम के मुक़तज़ी(इस्लाम जाहिर हो)हों तो हम पर लाज़िम है कि एक वजह की तरफ़ मैलान रखें और जब तक एहतिमाल काइम हो,मुसलमान को काफ़िर न कहें।

इस लिये रद्दुल मुहतार में फ़रमाया :

”لا يفتى بكفر مسلم ان امكن حمل كلامه على محمل حسن او كان في كفره اختلاف ولو كان ذلك رواية ضعيفة.”

यअनी" मुसलमान के काफिर होने का फतवा न दिया जायेगा जबकि उस के कौल व फेअल को अच्छे पहलू पर रखना मुमकिन हो या उस के कुफ्र में इख्तिलाफ हो अगरचे रिवायते जईफा हो।

(रदुल मुहतार, जि. 4 स. 229, 230)

सुम्मा अकूलो (अल्लामा अजहरी फरमाते हैं) हमारे कलिमात जो अभी गुजरे उन से साफ़ ज़ाहिर है कि हदीस का ज़ाहिर मफ़ाद (मकसद) उस काइल का बसुदूरे हिन्स (जब कसम तोड़े) काफिर होना है न कि मुतलकन काफिर होना तो उस सूरत में ज़ाहिर हदीस भी उस दूसरे कौल के काइलीन के साथ है और काइल के मुतलकन कुफ़्र के ज़ाहिर होने का दअ्वा महल्ले नज़र (गौर करने का मक़ाम) है।

इस को ज़ाहिरन तस्लीम भी कर लें (ज़ाहिरी तौर पर मान भी लें) तो उस पर काइल की तक्फ़ीर (काफिर कहना) उसी सूरत में मुमकिन है जब कि ज़ाहिरी मअ्ना के मुराद होने का एहतिमाल आशकार (ज़ाहिर) हो और अगर करीना उर्फ़ या और कोई करीना इस बात पर काइम हो कि काइल ने वह मअ्ना—ए—कुफ़्री असलन मुराद (कुफ़री मअ्ना बिल्कुल मुराद न लिये) न लिये तो उस सूरत में वह एहतिमाल ही न रहेगा और ज़ाहिर मतरुक (ज़ाहिर मअ्ना छोड़ दिये जायेंगे) ठहरेगा उस की बहुत मिसालें मुम्किन हैं।

आम बोल चाल में कहते हैं कि "फसले बहार ने सब्ज़ा उगाया, हाकिम ने बचाया, उस मरज़ का यह शाफी इलाज है, यह ज़हरे कातिल है" यहाँ इन सब मिसालों में मोमिन का ईमान, उर्फ़ सब गवाह हैं कि उस की मुराद इकीकी मअ्ना जो लफ़्ज़ से ज़ाहिर है नहीं बल्कि इन तमाम मिसालों में सब की तरफ़ इस्नाद की गई है कि एअ्तिकाद मोमिन का यह है कि मुअस्सिर इकीकी अल्लाह तआला है और यह चीजें खुद मुअस्सिर नहीं बल्कि अल्लाह के काइम करदा अस्बाब हैं जिन में अल्लाह तआला ने यह तासीर रखी है।

यह वहाबिया का जुल्म है कि इन आम मुहावरात से आँखें मीचते हैं और उन के बोलने को तो मुसलमान जानते हैं मगर उसी

तौर पर औलिया, अम्बिया के लिये जो मुसलमान तसरूफ व मदद साबित करे तो उसे मुशिरक गर्दानते हैं। जिस में राज यह है कि उन के नज्दीक औलिया दर किनार रसूल ही की तअजीम शिर्क है जैसा कि "तकवियतुलईमान" के मुतालअ (पढ़ने)से जाहिर है।

अअला हजरत अजीमुलबरकत उन ही के इक में फरमाते हैं।

शिर्क ठहरे जिस में तअजीम रसूल

उस बुरे मजहब पे लअनत कीजिये

आमद बर सरे मतलब ! अब इस मसअला जाहिरा की तरफ लौटिये और तकरीरे मुनदरजा बाला पर नजर रख कर सोचिये जब कि काइल की मुराद अपने नफस को जज्र व तहदीद और वर्ईदे शदीद और उस मकरुह व महजूर काम पर मुअल्लक करने से उस काम से इम्तिनाअ व इज्तिनाब(मुहाल व परहेज) की ताकीद ठहरी तो यह अगर उर्फ आदत से मअलूम हो तो ऐसी सूरत में वह जाहिरी जिन का मफाद मुतलकन काफिर होना है न मुतहम्मिल न मुराद बल्कि कतअन मतरुक हैं और उस के इक में जाहिर बल्कि फौकुज्जाहिर काइल की वही मुराद है जो उर्फ व उस्लूबे मोअताद से मअलूम हुई।

लिहाजा काइल जब तक हानिस न हो काफिर न ठहरेगा। हाँ यह जरूर है कि ऐसी कसम खाना सख्त शनीअ अशद हराम है जिस से काइल पर तोबा लाजिम है और एहतियातन तजदीद ईमान भी जरूर ! (दुर्र मुख्तार जि. 4 स. 246,247 पर है)

”فیکون کفر اتفاقا یبطل العمل والنکاح واولاده اولاد الزنا وما فيه خلاف یومر بالا ستغفار والتوبة وتجديد النکاح ای تجديد الاسلام وتجديد النکاح.” जो बात मुत्तफक अलैहि कुफ (जिस बात के कुफ होने में इत्तिफाक) है वह अमल को और निकाह को बातिल कर देती है और ऐसे शख्स की औलाद औलादुज्जना है और जिस के कुफ होने में इखिलाफ है, उस में काइल को तौबा (तजदीद ईमान) तजदीद निकाह का हुक्म है।

रही यह बात कि बसूरते हिन्स(कसम तोड़ने की सूरत में) उस पर कफ़ारा है या नहीं तो अइम्मा हन्फ़िया का मज़हब यह है कि कसम तोड़ने की सूरत में उस पर कफ़ार—ए—कसम लाज़िम होगा जब कि किसी फ़ेअले आइन्दा पर कसम को मुअल्लक़ किया हो और उसकी नज़ीर तहरीमे मुबाह है यअनी किसी फ़ेअले मुबाह को अपने ऊपर बज़रिआ कसम हराम कर ले तो अल्लाह तआला ने अपने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम से फ़रमाया :

”يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ“ यअनी ऐ ग़ैब बताने वाले(नबी)तुम अपने ऊपर क्यों हराम किये लेते हो वह चीज़ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल की” सूरए तहरीम पारा 28/आयत1)

सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हज़रत उम्मुलमोमिनीन हफ़सा रदियल्लाहु तआला अन्हा के महल में रौनक अफ़रोज़ हुये। वह हुज़ूर की इजाज़त से अपने वालिद हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु की इयादत को तशरीफ़ ले गयीं। हुज़ूर ने हज़रत मारिया किब्तिआ को सर फ़राज़े ख़िदमत फ़रमाया। यह हज़रते हफ़सा पर गिरों गुज़रा हुज़ूर ने उन की दिल जोई के लिये फ़रमाया:मैं ने मारिया को अपने ऊपर हराम किया और मैं तुम्हें खुश ख़बरी देता हूँ कि मेरे बअद उम्मत के मालिक अबूबक़ व उमर होंगे वह उस से खुश होगयीं और निहायत खुशी में उन्होंने ने यह तमाम गुफ़्तुगू हज़रत आइशा रदियल्लाहु तआला अन्हा को सुनाई उस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई :

इस आयत के मुत्तसिल सर कार से यह इरशाद हुआ:

”قد فرض الله لكم تحلة إيمانكم“ बे शक़ अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी कसमों का उतार मुक़रर फ़रमा दिया”

(पारा 28 सूरए तहरीम आयत 2 कन्जुलईमान)

उस तरह कसम खाकर कि वह अगर यह काम करे”तो वह

यहूदी या नसरानी है" अपने एअतिक़ाद में मुबाह को हराम ठहरा लिया। लिहाज़ा बसूरत हिन्स यहाँ भी कपफ़ारा लाज़िम होगा। यह उस सूरत में है जब कि किसी फ़ेअले आइन्दा पर ऐसी कसम खाई जाये और अगर फ़ेअले माज़ी पर ऐसी कसम खाई और इस कसम में वह शख्स झूटा था तो इस सूरत में कपफ़ारा नहीं महज़ तोबा लाज़िम है और एहितयातन तजदीदे ईमान तजदीदे निकाह भी ज़रूरी है।

इस किस्म की कसम उर्फ़ में "यमीने ग़मूज़" कहलाती है और उस में भी हस्बे साबिक़ दो कौल हैं पहला यह कि वह शख्स मुतलक़न काफ़िर ठहरेगा और इस सूरत में ज़ाहिर हदीस "कि फ़रमाया अगर वह झूटा इला आख़िरिही" उस का कौल शदीद है और दूसरा कौल यह कि महज़ कसम मुराद ली तो काफ़िर न होगा।

यहाँ तक कसम की दो किसमें बयान हुई और तीसरी किस्म "यमीने लग्व" है यअनी ग़लत फ़हमी में किसी बात पर कसम खाई और वाकिआ उस के गुमान के ख़िलाफ़ हो मसलन यूँ कहे "ख़ुदा की कसम मैं ने ज़ैद से बात न की" "ख़ुदा की कसम मैं घर में दाख़िल हुआ" इस का हुक्म यह है कि उस में न गुनाह न कपफ़ारा।

قال الله تعالى:
"لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ
يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُمُ الْأَيْمَانَ."
 यअनी अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता तुम्हारी ग़लत फ़हमी की कसमों पर हाँ उन कसमों पर गिरफ़्त फ़रमाता है जिन्हें तुमने मज़बूत किया (सुरए माइदा पारा 7 आयत 89 कन्जुल ईमान)

यहाँ तो ग़ैरुल्लाह की कसम के मुतअल्लिक़ तफ़सीली अहक़ाम बर वजह तमाम हुई और खुद अल्लाह के असमा व सिफ़ात की कसम ख़ाना सख़्त महल्ले इहितियात है लिहाज़ा इस में भी ज़्यादती न चाहिये।

हदीस शरीफ़ में आया :

“مَنْ كَانَ حَالِفًا فَلْيَحْلِفْ بِاللَّهِ أَوْ لِيَصْمِتْ” यअनी

“जो कसम खाने का इरादा करे तो अल्लाह की कसम खाये या चुप रहे” (फैजुलकदीर जि. 6 स. 207)

और अकसर अहवाल में अल्लाह की कसम खाने से बअज़ रहना और नाम इलाही को इब्तिज़ाल (हलका जानना) से मुक़तज़ा-ए-इहतियात है और बकसरत अल्लाह की कसम खाना ज़ुरअत व बे बाकी है।

इसी लिये कुआने करीम में फ़रमाया :

“وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِّإِيمَانِكُمْ” यअनी “और अल्लाह

को अपनी कसम का निशाना न बनालो” (सुरए बक पारा 2 आयत 224 कजुलईमान)

मुफ़स्सेरीन ने इस आयत के मअना यह बताये कि अल्लाह के नाम को निशाना न बनाओ और जा व बे जा उस को मुबतज़ल न करो कि तुम नेको कार रहो जब नादिरन कसम खाओ और गुनाह से बचो जब कि तुम्हारी कसमें कम हों। इस लिये कि कसमों की कसरत नेकी और तक़्वा से दूर करती है और गुनाह और अल्लाह के हज़ूर बे बाकी से करीब करती है।

चुनाँचि अल्लामा जस्सास राज़ी फ़रमाते हैं:

“فالمعنى لا تعترضوا اسم الله وتبذلوه فى كل شئ لان تبرؤ اذا حلقتم وتتقوا المأثم فيها اذا قلت ايمانكم لان كثرتها تبعد من البر والتقوى وتقرب من المأثم والجرأة على الله تعالى” (اکامترآن جلد اول ص ۲۵۴)

“तो मतलब यह है कि अल्लाह तबारक व तआला तुम को कसरते कसम से मनअ करता है और बे बाकी से बाज़ रखता है इस लिये इस से बाज़ रहने में ही नेकी व परहेगारी और तुम्हारी इस्लाह है”।

जब आदमी बगैर तलब के गवाही में सबक़त करे

यअनी बातिल गवाही दे जैसा कि "मजमअ बिहारुल अन्वार" में है:

يأتى قوم يشهدون ولا يستشهدون هذا عام فيمن يؤدى
الشهادة قبل أن يطلبها صاحب الحق فلا يقبل، وما قبله
خاص، قيل هم الذين يشهدون بالباطل

कौम आयेगी जिस के लोग गवाही देंगे और उन से गवाही तलब नहीं
की जायेगी यह आम है उस में कि गवाही पूरी कर ले साहिबे हक के
तलब करने से पहले कबूल नहीं होगी और यहाँ कब्लियत खास है
और कहा गया कि उस से मुराद वह लोग हैं जो झूटी गवाही दें।
(मजमअ बिहार जि. अब्बल स. 270) करीना व मकाम उस का मुकतज़ी⁽¹⁾ है।

خير الناس قرنى ثم الذين يلونهم ثم الذين
يلونهم ثم يفسو الكذب حتى يشهد الرجل ولا يشهد ويستحلف
يأمنى

फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि
वसल्लम ने : सब से बेहतर मेरा जमाना है फिर जो उस से करीब है फिर जो उस से
करीब है फिर झूट की कसरत हो जायेगी यहाँ तक कि आदमी गवाही देगा बगैर उस
के कि गवाही तलब की जाये और आदमी हल्फ लेगा बगैर उस के कि उस से
हल्फ लिया जाये (तिर्मिज़ी शरीफ जि. दोम स. 54/ फारुकी गुफिरलहु)

जब ओहदे मीरास हो जायें

मुराद उस से वह लोग हैं जो महज बाप दादा की वरासत से अमीर व वाली बन बैठें और मुसलमानों के मुआमलात और उन के बिलाद के खुद साख्ता हाकिम हो जायें बगैर उस के कि ख्वास अशराफ (शरीफ लोग) व अहले इल्म कि अरबाबे हिल व अक्द हैं। वे जन्न व इकराह अपने इख्तियार से उन के मुआविन हों न ऐसे लोगों से मशवरा लिया जाये न यह अमीर बैठने वाले उस के मुस्तहक⁽¹⁾ हुए यह शरअन मजमूम व ममनूअ है और उस हुक्मे मनअ व मजम्मत के उमूम में वह लोग भी दाखिल हैं। जिन को अवाम अरबाबे हिल व अक्द को नजर अन्दाज कर के चुन लें और बदरज-ए-औला वह लोग उस के मिस्दाक हैं जो खुद को चुनवाने के लिये खड़े हुये हैं।

“मजमउलबिहार” में एक हदीस लिखी जिस का मजमून यह है कि उस से बढ़ कर बड़ा खाइन कोई नहीं जो गैर अस्हाबे राय अवाम का मुन्तखब अमीर हो।

इस हदीस की तर्दीक जमाना-ए-हाल में चुनिन्दा और चुनीदा के अहवाल से खूब जाहिर है। लिहाजा इस पर मजीद तब्सरे की जरूरत नहीं और हदीसे मुन्दरजा बाला के मिस्दाक वह लोग भी हैं जो बुजुर्ग के जानशीन महज वरासत के बल पर बगैर इस्तिहकाक वे इन्तिखाबे शरई बन बैठे हैं जैसा कि जमाना-ए-हाल में मुशाहिदा है।

1. हदीसे पाक में है : **اِذَا وَسَدَ الْأَمْرَإُ يَلَى الْخِلَافَةِ أَوْ الْقَضَاءِ أَوْ الْأَمْرِ**
 “यअनी जब काम मसलन खिलाफत या कजा या अमारत ना अहलों के सुपुर्द हो जाये तो कयामत का इन्जियर करो”
 मजमउलबिहार जि. अब्दुल स. 101 फारुकी गुफिरलहु.

जब मर्द मर्दों पर और औरतें औरतों पर इक्तिफ़ा करे

उस की तफ़सील दूसरी हदीस में इरशाद हुई जिस को ख़तीब और इब्ने असाकिर ने हज़रत वासिला और अनस से रिवायत किया कि सरकार अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : दुनिया उस वक़्त तक फ़ना न होगी जब तक औरतें औरतों पर और मर्द मर्दों पर इक्तिफ़ा न करें और “السَّحَابُ” औरत का औरतों से बाहम मुबाशरत करना, औरतों का आपस में जिना है।

हदीस के अल्फ़ाज़ यह हैं जो कन्ज़ुलउम्मा ज़ि. 14 स. 226 पर मौजूद हैं:

“لا تذهب الدنيا حتى يستغنى النساء بالنساء و
الرجال بالرجال، والسحاق زنا النساء فيما بينهن”

और तीसरी हदीस हज़रत उबै से मरवी है फ़रमाया कि हम से कहा गया इस उम्मत के पीछे लोगों में क़यामत के करीब कुछ चीज़ें ज़ाहिर होंगी। उन में से यह है कि आदमी अपनी बीवी से या कनीज़ से उस के¹दुबुर में

1. आज कल अमरीका में यह मर्ज आम है उन का इस्तिदलाल यह है कि हम ने निकाह किया है जिस से बीबी के ज़िरम का हर हिस्सा शौहर पर हलाल हो जाता है तुरफ़ा यह कि वहाँ की औरतें खुद अपनी रगबत से उस कवीह फ़ैज़ल का इस्तिफ़ा करती हैं जो सख़्त हराम है और जो लोग ऐसा करते हैं सख़्त गुनाहगार और मुस्तहक़ ग़ज़बे ज़ब्बार हैं उन पर अपने उस फ़ैज़ल से तांबा व इस्तिग़फ़ार वाजिब।

चुनाँवे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : أتى حائضاً أو امرأةً ففقد كفر بما أنزل على محمد صلى الله تعالى عليه و سلم यअनी जो शख्स अपनी बीवी से हालत हैज में या उस की दुबुर में जिमाअ करे वे शक उस ने कुफ़ किया उस के साथ जो मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ अहकामुलकुर्आन ज़ि. अव्वल स. 353 (फारूकी)

जिमाअ करे और यह उन अअ्माल में से है जिन को अल्लाह और रसूल ने हराम किया और उस पर अल्लाह व रसूल का ग़ज़ब है और उन्हीं में से मर्द⁽¹⁾ का मर्द के साथ सोहबत करना और यह उन बातों में से है जिन को अल्लाह व रसूल ने हराम किया और उन्हीं में से औरत का औरत के साथ मुबाशरत करना और यह उन अअ्माल में से है जिन को अल्लाह व रसूल ने हराम किया और उस पर अल्लाह व रसूल की नाराज़गी है इला आखिरिही (उस के आखिर तक)

हदीस के अल्फ़ाज़ यह हैं जो कन्जुलउम्मा ल जि. 14 स. 575

पर मौजूद हैं :

”عن ابی قال قیل لنا أشياء تكون فی آخر هذه الامة عند اقتراب الساعة فمنها نکاح الرجل امرأته وامته فی دبرها و ذلك مما حرم الله ورسوله ویمقت الله علیه ورسوله و منها نکاح الرجل الرجل و ذلك مما حرم الله علیه ورسوله و منها نکاح المرأة المرأة و ذلك مما حرم الله ورسوله و یمقت الله علیه ورسوله
صلی الله علیه وسلم“

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कुर्वे कयामत की जो निशानियाँ बयान फ़रमायीं उन में से अकसर अलामतें वाक़ेअ़ हो चुकीं जिस पर मुशाहिदा शाहिदे अदल है और जो बाकी हैं वह भी ज़रूर वाक़ेअ़ होंगी वल्लाहु तआला अअूलमु

1. यह इस कदर कबीह और नापाक फ़ैअ़ल है कि अगर लूती तमाम समन्दरों के पानी से गुस्ल करे तब भी पाक नहीं होगा फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कि : अल्लाह तआला लवातत के मुस्तकिब को क़ब्र में खिन्ज़ीर बना देता है उस के नथनों में आग सी घुस्ती है और पीछे से निकलती रहती है (नुजहतुल मजालिस जि. 2 स. 62) फारुकी.

2. जिस तरह मर्दों में लवातत का मर्ज तेज़ी से बढ़ रहा है उसी तरह अब औरतों में भी हम जिन्स परस्ती बढ़ती जा रही है और तुरफा तो यह कि योरोप के अक्सर ममालिक में उसे कानूनी दर्जा हासिल है और वहाँ हम जिन्स परस्त औरतें और मर्द आपस में बे डिझक कोर्ट मैरेज कर रहे हैं इस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की यह पेशीन गोई हर्फ़ यहर्फ़ सच साबित हो रही है (फारुकी गुफ़िरलहु)